mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-28 अंक-322 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

23 नवंबर 2024 शनिवार

दैनिक मीडिया ऑडीटर

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

जोफा आर्चर को...

@ पेज 7

छत्तीसगढ़ के सुकमा में मारे गए 10 नक्सली

● सभी शव और 3 ऑटोमैटिक हथियार बरामद ● जनवरी से अब तक 207 नक्सली हो गए ढेर

जगदलपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के सुकमा जिले में सुरक्षाबलों ने 10 नक्सलियों को मार गिराया है। मौके से सभी के शव और 3 ऑटोमैटिक हथियार बरामद किए गए हैं। भेज्जी के दंतेसपुरम, कोराजुगुड़ा, नागाराम के जंगल में डीआरजी और सीआरपीएफ की कोंटा और किस्टाराम एरिया कमेटी के नक्सलियों के साथ मुठभेड़ हुई। इलाके में सर्चिंग जारी है। इस साल 1 जनवरी से 22 नवंबर तक 207 नक्सली मारे गए हैं। बस्तर आईजी सुंदरराज पी ने कहा कि इस मुठभेड़ में एके-47, इंसास, और कारतूस समेत अन्य हथियार भी बरामद किए गए हैं।

सुकमा के एसपी किरण चव्हाण ने इसे बड़ी सफलता बताया। जवान मौके पर ही हैं। लौटेंगे तो ज्यादा जानकारी मिलेगी। सुरक्षाबलों को सूचना मिली थी कि भेज्जी के जंगल में नक्सलियों का जमावड़ा है। इसके बाद जवानों को रवाना किया गया, जहां नक्सलियों से मुठभेड़ हो गई।

एक दिन पहले ही भारी संख्या में नक्सली ओडिशा के रास्ते बॉर्डर में घुसे थे। इस दौरान ओडिशा पुलिस के साथ मुठभेड़ भी हुई थी। इसमें एक नक्सली मारा गया था, वहीं एक जवान घायल हुआ था। इसके बाद छत्तीसगढ़ फोर्स अलर्ट पर थी। ओडिशा और गरियाबंद से सटे उदंती अभ्यारण्य जंगल में गुरुवार को भी पुलिस-नक्सली मुठभेड़ हुई थी।

संक्षिप्त समाचार

प्रत्यर्पण से बचने सुप्रीम कोर्ट पहुंचा तहव्वुर राणा

मुंबई हमले की फंडिंग का आरोप

वॉशिंगटन (एजेंसी)। मुंबई में 26 नवंबर 2008 को हुए आतंकी हमले के आरोपी तहव्वुर राणा ने भारत प्रत्यर्पण के खिलाफ अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट में अपील की है। इसी साल 15 अगस्त को अमेरिकी फेडरल कोर्ट ने भारत-अमेरिका प्रत्यर्पण संधि के तहत तहव्वुर को भारत भेजे जाने का फैसला सुनाया था। इस फैसले के

खिलाफ ही राणा सुप्रीम कोर्ट पहुंचा है। पाकिस्तानी मूल के कनाडाई बिजनेसमैन राणा ने पिछले साल फेडरल कोर्ट नाइंथ सर्किट में एक याचिका दायर की थी। उसने गुहार लगाई थी कि सुनवाई तक उसे भारत को न सौंपा जाए, जिसे खारिज कर दिया गया था। अमेरिकी अदालत ने याचिका को खारिज किया था।

भारतीयों की सुरक्षा पर कनाडा सरकार का यूटर्न

एक दिन में ही बदला रुख

ओटावा (एजेंसी)। कनाडा ने भारत जाने वाले यात्रियों की अतिरिक्त जांच के अपने फैसले को वापस ले लिया है। कनाडा की ट्रांसपोर्ट मंत्री अनीता आनंद के कार्यालय ने गुरुवार को सीबीसी न्यूज को बताया कि उन प्रतिबंधों को हटा दिया गया है। नए नियम पिछले सप्ताह ही लागू किए गए थे। कनाडा ने सोमवार को कहा था कि भारत

जाने वाले यात्रियों के लिए अत्यधिक सावधानी बरती जा रही है। एयर कनाडा ने भारत जाने वाले यात्रियों के लिए एक नोटिस भी जारी किया था। नोटिस में कहा गया था, भारत जाने वाले सभी यात्रियों के लिए सुरक्षा संबंधी कड़े आदेशों के कारण आपकी आगामी फ्लाइट के लिए प्रतीक्षा समय अपेक्षा से अधिक होने की उम्मीद है।

कुरुक्षेत्र में 18 दिनों तक चलेगा अंतरराष्ट्रीय गीता जयंती महोत्सव

मुख्यमंत्री सैनी ने दी जानकारी

पंचकूला (एजेंसी)। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सैनी ने चंडीगढ़ में प्रेसवार्ता कर अंतरराष्ट्रीय गीता जयंती महोत्सव के कार्यक्रम की घोषणा की। इस मौके पर ओडिशा के कैबिनेट मंत्री सूर्यवंशी सूरज और तंजानिया की हाई कमिश्नर अनीशा और स्वामी ज्ञानानंद भी मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री ने बताया कि अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव का इस बार 28 नवंबर से 15 दिसंबर तक आयोजन होगा। यह आयोजन 18 दिन तक चलेगा। 2016 से यह महोत्सव चल रहा है। इस महोत्सव में लाखों की संख्या में श्रद्धालु यहां आते हैं। मुख्यमंत्री ने बताया कि इस मेले को देश विदेश में लोकप्रियता मिली है। 2023 में इस महोत्सव में 45 लाख लोगों ने 18 अलग-अलग दिनों में हिस्सेदारी की थी।

अब चीन सीमा तक दौड़ेगी भारतीय रेल!

● भविष्य की तैयारी में जुटा है इंडियन रेलवे, बनाया बड़ा प्लान ● उत्तराखंड में 169 किमी रूट पर पिलर लगाने का काम किया शुरू ● सेना भी चंद घंटों में सीमा पर सप्लाई पहुंचा सकेगी, बढ़ेगी सुविधा

देहरादून (एजेंसी)। लद्दाख में चीन के साथ तनाव भले ही घट रहा हो, लेकिन भारत भविष्य की तैयारियों पर काम तेज कर चुका है। इसी क्रम में जल्द ही आपको उत्तराखंड में चीन सीमा तक भारतीय रेल दौड़ती नजर आएगी। इसे चंपावत जिले के टनकपुर से बागेश्वर के बीच बनाया जाना है। इस 169 किमी लंबी रेल लाइन के लिए सर्वे का काम लगभग पूरा हो चुका है। यह रेल लाइन उच्च हिमालय के पहाड़ों के बीच से गुजरते हुए चीन सीमा से लगते पिथौरागढ़ और बागेश्वर तक जाएगी।

रेलवे के जनसंपर्क अधिकारी राजेंद्र सिंह के मुताबिक नई रेल लाइन रणनीतिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि पिथौरागढ़ जिला नेपाल व चीन के साथ अंतरराष्ट्रीय सीमा से जुड़ा है। टनकपुर भारत-नेपाल सीमा से लगता इलाका है और यह उत्तराखंड में नेपाल सीमा पर भारत का आखिरी रेलवे स्टेशन भी है। इस रूट पर सर्वे के साथ पिलर लगाने का काम शुरू हो चुका है।

पिथौरागढ़ जिले के उच्च हिमालय वाले इलाकों में चीन तक पहुंचने के लिए 5 दर्रे हैं। इनमें लम्पिया धुरा, लेविधुरा, लिपुलेख, ऊंटा जयंती व दारमा दर्रे हैं। ये सभी करीब 5 हजार मीटर से अधिक ऊंचाई पर स्थित हैं।

● अंग्रेजों ने भी 150 साल पहले रेल लाइन का सर्वे किया था- उत्तराखंड के इस इलाके का सामरिक व व्यापारिक महत्व सदियों से रहा है, क्योंकि इन सीमांत जिलों के लोग तिब्बत के साथ सीमा व्यापार करते रहे हैं। इसलिए अंग्रेजों ने भी 1882 में पहली बार टनकपुर-बागेश्वर रेल लाइन का सर्वे किया था। उनके सर्वे प्लान के रूट मैप पर ही नए सिरे से सर्वे किया गया। यहां दिसंबर से पटरियां बिछेंगी। 125 किमी रूट पर 85 किमी में टनल खुदाई हो चुकी है। रेल विकास निगम के प्रबंधक अजीत सिंह यादव के मुताबिक 16 किमी टनल और खुदना है। यह काम मार्च 2025 तक पूरा होना है। यह रूट ब्लास्ट लेस तकनीक पर बना है। इस पर हाई स्पीड बुलेट ट्रेन भी दौड़ेगी।

पंजाब सीएम के सलाहकार की नियुक्ति की चर्चा पर बवाल

सांसद मालीवाल बोलीं-

● मुझे पीटने वाले विभव को मिला ईनाम, कांग्रेस ने कहा-जवाब देना चाहिए

जालंधर (एजेंसी)। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के मुख्य सलाहकार के तौर पर विभव कुमार की नियुक्ति की चर्चाओं के बीच पंजाब की राजनीति में उथल-पुथल शुरू हो गई है। दिल्ली की सांसद स्वाति मालीवाल ने कल यानी गुरुवार को कुमार की नियुक्ति को लेकर

पंजाब के मुख्यमंत्री और दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल पर सवाल उठाए। हालांकि, विभव कुमार की नियुक्ति को लेकर पंजाब सरकार की ओर से कोई औपचारिक पुष्टि नहीं की गई है जिसके बाद पंजाब कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और जालंधर कैंट से एमएलए परगट सिंह ने भी राज्य के मुख्यमंत्री, दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री केजरीवाल पर सवाल खड़े किए और स्वाति मालिवाल के सवालों का जवाब देने को कहा।

कश्मीरी पंडितों की दुकानों पर हुआ बुलडोजर ऐक्शन

जम्मू में बिना कोई नोटिस दिए ढहाई गई 10 दुकानें

जम्मू (एजेंसी)। विस्थापित कश्मीरी पंडितों की दुकानों को जम्मू विकास प्राधिकरण (जीडीए) ने बुलडोजर चला दिया। इस कार्रवाई के बाद लोग विरोध कर रहे हैं और अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। लोगों का कहना है कि दुकानों को बिना नोटिस दिए ढहा दिया गया। यह घटना बुधवार को हुई, जब जम्मू शहर में मुठी कैंप के पास स्थित कश्मीरी पंडितों की दर्जन भर दुकानों को जेडीए ने ढहा दिया। ये दुकानें लगभग तीन दशक पहले विस्थापित कश्मीरी पंडितों ने बनाई थीं। जेडीए का कहना है कि दुकानें उनकी जमीन पर बनी थीं। वहीं आयुक्त अरविंद करवानी ने घटनास्थल का दौरा किया और प्रभावित परिवारों को आश्वासन दिया कि उनके लिए क्षेत्र में नई दुकानें बनाई जाएंगी। उन्होंने कहा कि ये दुकानें जेडीए की जमीन पर थीं। राहत संगठन ने मुठी कैंप फेज-2 में एक शॉपिंग कॉम्प्लेक्स बनाने के लिए टेंडर जारी किए हैं। जल्द ही 10 दुकानें बनाकर इन दुकानदारों को आवंटित कर दी जाएंगी।

मणिपुर हिंसा के बाद सुरक्षा को लेकर ऐक्टिव हुए मंत्री

घर को कंटीले तारों से घेरा, कहा-संपत्ति की सुरक्षा करना सबको संवैधानिक हक

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर के फूड और पब्लिक डिस्ट्रीब्यूशन मिनिस्टर एल सुसींद्रो मैतेई ने अपने घर को कंटीले तारों और लोहे के जाल से घेर दिया है। उन्होंने कहा कि 3 मई से अब तक मेरे घर पर 3 बार हमला हुआ है। अगर उपद्रवी मेरे घर पर हमला करते हैं तो अपनी जिंदगी और प्रॉपर्टी की रक्षा करना हमारा संवैधानिक अधिकार है। 16 नवंबर को उपद्रवियों ने 3 मंत्रियों और 9 विधायकों के घर हमला किया था। इनमें सुसींद्रो का घर भी शामिल था। वाहनों में आग लगाई और फायरिंग भी की थी। सुसींद्रो ने मणिपुर हिंसा के बीच अपने घर पर वेपंस ड्रॉप बॉक्स बनाया था,

ताकि उपद्रवी लूटे हुए हथियारों का वहां समर्पण कर सकें। हालांकि, एक बार फिर हमलावर उनके घर से हथियार लूट ले गए हैं। 3000 लोगों ने घर पर हमला किया था- सुसींद्रो सुसींद्रो ने बताया, 16 नवंबर को मेरे घर पर उपद्रवी आए, उनके पास इलेक्ट्रिक ड्रिल और हथौड़े थे। वे लूटपाट करने के लिए आए थे। मैं उस दिन घर पर नहीं था। दोपहर में बड़ी संख्या में महिलाएं और बुजुर्ग आए थे। उन्होंने मेरे परिवार से बात

की और फिर चले गए। शाम साढ़े छह बजे करीब 3 हजार लोगों की भीड़ आई, इनमें ज्यादातर पुरुष थे। उन्होंने मेरे घर पर गोलियां दागीं। मैंने अपनी सिक्योरिटी से कहा कि भीड़ को कोई नुकसान नहीं पहुंचना चाहिए। सिक्योरिटी फोर्सेस ने भीड़ को तितर-बितर करने के लिए हवाई फायरिंग की।

विधायक के घरों से लूटे डेढ़ करोड़ के जेवर विधायकों के घरों पर हमले के दौरान 1.5 करोड़ रुपए के जेवर लूटे जाने का खुलासा हुआ है। जदयू विधायक के. जॉयकिशन सिंह की मां ने पुलिस में इसकी शिकायत दर्ज कराई है। तोड़फोड़ करने वाली भीड़ ने थांगमेइबंद इलाके में विधायक के आवास से 18 लाख रुपए नकद भी लूट लिए। विस्थापितों के लिए रखे कई सामान भी नष्ट कर दिए।

प्रदूषण पर दिल्ली सरकार को सुप्रीम कोर्ट ने दिखाया 'आईना'

सभी 113 प्रवेश बिंदुओं पर तुरंत चेकपॉइंट स्थापित करने का दिया निर्देश

दिल्ली सरकार के जवाब से असंतुष्ट उच्च अदालत ने लगाई जमकर फटकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में बढ़ते प्रदूषण पर शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई। शीर्ष अदालत ने दिल्ली सरकार को इस मामले में फटकार लगाई है। कोर्ट सुनवाई के दौरान सरकार के दिए हलफनामे से भी संतुष्ट नहीं दिखा। कोर्ट ने ग्रैप-4 के दो बिंदुओं पर भी असंतुष्टता जताई है। इसके अलावा अदालत ने एंट्री प्वाइंट्स पर भी सवाल उठाया है। कोर्ट ने दिल्ली सरकार को निर्देश दिया है कि वह सभी 113 बिंदुओं पर तुरंत चेकपॉइंट स्थापित करें। सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली में भयानक रूप ले रहे प्रदूषण पर आज चिंता व्यक्त करते हुए कुछ दिशानिर्देश दिए हैं। कोर्ट ने कहा कि वे दिल्ली में प्रवेश के सभी 113 बिंदुओं पर तुरंत चेकपॉइंट स्थापित करें।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि प्रवेश बिंदुओं पर तैनात कर्मियों को आवश्यक वस्तुओं के अंतर्गत स्वीकार्य वस्तुओं के बारे में स्पष्ट रूप से जानकारी दी जानी चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि 113 प्रवेश बिंदुओं में से 13 प्रमुख प्रवेश बिंदुओं पर निगरानी रखी जाती है ताकि अनुपालन सुनिश्चित किया जा सके। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि लगभग 100 प्रवेश बिंदु मानव रहित हैं और ट्रकों के प्रवेश की जांच करने वाला कोई नहीं है।

नेतन्याहू पर 'आपस' में ही बंट गए पश्चिमी देश

कोर्ट से गिरफ्तारी वारंट जारी होने पर अमेरिका हुआ नाराज

तेल अवीव (एजेंसी)। इजराइली पीएम बेंजामिन नेतन्याहू पर अंतरराष्ट्रीय क्रिमिनल कोर्ट के लगाए वॉर क्राइम के आरोपों और अरेस्ट वारंट पर पश्चिमी देश आपस में बंट गए हैं। न्यूज एजेंसी के मुताबिक अमेरिका ने गिरफ्तारी वारंट को मानने से इनकार कर दिया है। वहीं ब्रिटेन, कनाडा, नीदरलैंड और इटली ने कहा है कि अगर नेतन्याहू उनके देश आते हैं तो उन्हें गिरफ्तार किया जाएगा। इस बीच अमेरिका ने कोर्ट के आदेश को मानने ने इनकार किया है। व्हाइट हाउस की प्रवक्ता कैरीन जीन पियरे कोर्ट के फैसले लेने के तरीके पर सवाल उठाए हैं और इसे 'जल्दबाजी' बताया है। अमेरिका कोर्ट का मेंबर देश नहीं है। इटली के रक्षा मंत्री गुइडो क्रोसिटो ने कहा कि उनका देश कोर्ट के नियमों को मानेगा।

महाराष्ट्र में सीएम पद पर खींचतान

शुरू हो गया 'खेला'

● अजित पवार के पोस्टर लगे, महायुति से बताया अगला सीएम

● एमवीए से पटोले बोले- कांग्रेस की अगुआई में सरकार बनेगी

मुंबई (एजेंसी)। विधानसभा चुनाव के नतीजों से एक दिन पहले महाराष्ट्र में नए सीएम को लेकर प्रेशर पॉलिटिक्स शुरू हो गई है। बारामती में एनसीपी अजित गुट के चीफ अजित पवार को भावी मुख्यमंत्री बताए जाने वाले पोस्टर लगाए गए हैं। अजित बारामती से ही विधानसभा चुनाव भी लड़ रहे हैं। उधर, महाविकास अघाड़ी खेमे में भी मुख्यमंत्री को लेकर खटपट शुरू हो गई है। कांग्रेस नेता नाना पटोले ने कहा- महाराष्ट्र में कांग्रेस के नेतृत्व में महाविकास अघाड़ी की सरकार बनेगी। ट्रेंड्स से ऐसा लगता है कि कांग्रेस को ज्यादा सीटें आएंगी। इसलिए सरकार कांग्रेस की अगुआई में बनेगी। पटोले का बयान शिवसेना के संजय राउत को रास नहीं आया है। राउत ने कहा कि महा विकास अघाड़ी सरकार

बनाएगी, लेकिन सीएम कौन होगा, यह एमवीए गठबंधन सहयोगी तय करेंगे। मैं इसे स्वीकार नहीं करूंगा। कोई भी नहीं करेगा। राउत ने यह भी कहा कि अगर कांग्रेस आलाकमान ने पटोले से कहा है कि वह सीएम होंगे तो कांग्रेस अध्यक्ष व राहुल गांधी को इसकी घोषणा करनी चाहिए।

संक्षिप्त समाचार

समर्थन मूल्य पर ज्वार, बाजरा की खरीदी 22 नवंबर से- खाद्य मंत्री राजपूत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने बताया है कि खरीफ विपणन मौसम 2024-25 के लिये न्यूनतम समर्थन मूल्य पर ज्वार, बाजरा की खरीदी 22 नवंबर से शुरू की जा रही है। खरीदी 20 दिसम्बर तक की जायेगी। ज्वार मालदण्डी का 3421 रूपये, ज्वार हाईब्रिड का 3371 रूपये और बाजरा का समर्थन मूल्य 2625 रुपये है। किसानों से एफएक्यू गुणवत्ता की उपज इन्हीं दरों पर उपार्जित की जायेगी। मंत्री श्री राजपूत ने बताया है कि उपार्जन प्रत्येक सप्ताह के सोमवार से शुक्रवार तक होगा। उन्होंने किसानों से आग्रह किया है कि निर्धारित समय पर उपार्जन केन्द्रों पर पहुंचकर ज्वार और बाजरा की बिक्री करें। उल्लेखनीय है कि बाजरा के लिये 9 हजार 854 और ज्वार के लिये 5 हजार 933 किसानों ने पंजीयन कराया है। समर्थन मूल्य पर ज्वार एवं बाजरा की खरीदी के बाद भुगतान, कृषक पंजीयन के दौरान आधार नम्बर से लिंक बैंक खाते में किया जायेगा। ज्वार एवं बाजरा उपार्जन अवधि के दौरान पड़ोसी राज्यों से उपार्जन केन्द्र पर लायी जाने वाली उपज की अवैध बिक्री को रोकने के लिये समुचित कार्रवाई के निर्देश कलेक्टर्स को दिये गये हैं। जिला स्तरीय समिति उपार्जन संबंधी सभी विवादों का अंतिम निराकरण तथा उपार्जित खाद्यान्न की गुणवत्ता की निगरानी करेगी। राज्य स्तर पर एक कंट्रोल-रूम भी स्थापित किया गया है। इसका टेलीफोन नम्बर 0755-2551471 है। उपार्जन अवधि में कंट्रोल रूम सुबह 9 से शाम 7 बजे तक संचालित रहेगा।

23 नवम्बर को होगी किशोर न्याय समिति की समीक्षा बैठक

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश में बाल संरक्षण बाल अधिकार एवं बाल सुरक्षा के लिए लागू विभिन्न अधिनियम /नियमों एवं बालकों को प्रदाय की जा रही विभिन्न सेवाओं के क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन के लिए तीन सदस्यीय किशोर न्याय समिति का गठन किया गया है। शनिवार 23 नवम्बर 2024 को उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री आनन्द पाठक की अध्यक्षता में किशोर न्याय समिति की बैठक का आयोजन किया जा रहा है। समीक्षा बैठक में मध्यप्रदेश में बाल संरक्षण के लिए तैयार वर्ष 2023-27 की वार्षिक कार्य योजना पर चर्चा की जाएगी। बैठक में किशोर न्याय समिति के सदस्य एवं उच्च न्यायालय ग्वालियर एवं जबलपुर के न्यायाधीश श्री जी एस अहलूवालिया तथा श्रीमति अनुराधा शुक्ला के अतिरिक्त बाल संरक्षण के मुद्दों पर कार्य करने वाली शासन के विभिन्न विभागों तथा महिला एवं बाल विकास, गृह, स्कूल शिक्षा, सामाजिक न्याय, श्रम, तकनीकी शिक्षा, स्वास्थ्य, अनुसूचित जाति एवं जनजाति ,पंचायत ग्रामीण विकास सहित 16 विभागों के प्रमुख सचिव तथा जिला एवं सत्र न्यायालय के न्यायाधीश ने भी उपस्थित रहेंगे।

प्रदेश में एम.पी. ट्रांसको के 132 के.व्ही. के तीन सब-स्टेशन होंगे ऑटोमेटिक-ऊर्जा मंत्री श्री तोमर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने बताया है कि एम.पी. पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी 132 केव्ही क्षमता वाले पुराने सब स्टेशनों को ऑटोमेटिक बनाने की तैयारी कर रही है। पहले पायलेट प्रोजेक्ट में जबलपुर, इंदौर और भोपाल के एक-एक सब-स्टेशन को चुना गया है। पूरी तरह से इन सब स्टेशनों को स्वचलित बनाने का काम जल्दी ही पूरा होगा। इन सब स्टेशनों को नजदीक के किसी एक प्रमुख सब-स्टेशन से संचालित एवं नियंत्रित किया जा सकेगा। प्रयोग के तौर पर 3 पुराने सब-स्टेशनों को पायलेट प्रोजेक्ट के रूप में लिया गया है, यदि सफलता मिली तो और भी पुराने सब-स्टेशनों को रिमोट से संचालित किया जा सकेगा। प्रदेश में दो जी.आई.एस. (गैस इंसूलेटेड स्विचगीयर) सब-स्टेशनों को पहले से ही ऑटोमेटिक संचालित किया जा रहा है। इनमें से एक महालक्ष्मी इंदौर में तथा दूसरा ई-8 अरेरा कालोनी भोपाल में क्रियाशील है।

वर्तमान में सब-स्टेशन का कार्य मैन्युअली होता है। सब-स्टेशनों के रिमोट आपरेशन से इनके संचालन और मानीटरिंग का कार्य सटीक होगा। इससे जहाँ मानव चूक के कारण होने वाली विद्युत दुर्घटनाओं की आशंका कम हो सकेगी, वहीं तकनीक के उपयोग से विद्युत आपूर्ति की विश्वसनीयता में बढ़ोत्तरी होगी। यह सब-स्टेशन पूरी तरह ऑटोमेटिक मोड पर संचालित होंगे। इन्हें ह्यूमन मशीन इंटरफेस तकनीक से नियंत्रित किया जायेगा। भोपाल के 132 के.व्ही. सब-स्टेशन अयोध्या नगर, इंदौर के 132 के.व्ही. सब-स्टेशन सत्य साईं एवं जबलपुर के 132 के.व्ही. सब-स्टेशन माढ़ोताल को अत्याधुनिक तकनीक के रिमोट ऑपरेटेड सब-स्टेशन में परिवर्तित किया जा रहा है। इस प्रयोग के सफल होने पर पावर ट्रांसमिशन कंपनी चुनिंदा 220 के.व्ही. सब-स्टेशन को भी रिमोट से संचालन करने की तैयारी की जायेगी। मध्यप्रदेश में एम.पी. पावर ट्रांसमिशन कंपनी के 400 के.व्ही. के 14 सब-स्टेशन, 220 के.व्ही. के 88 सब-स्टेशन और 132 के.व्ही. सब-स्टेशन के 314 सहित कुल 416 सब-स्टेशन हैं। जी.आई.एस. (गैस इंसूलेटेड स्विचगीयर) सब-स्टेशनों को रिमोट से आपरेट करने में पहले ही सफलता हॉसिल हो चुकी है।

संविधान दिवस के 75 वर्ष पूर्ण होने पर निकलेगी संविधान दिवस पद-यात्रा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग की अध्यक्षता में गुरूवार मंत्रालय में 26 नवंबर को संविधान के 75 वर्ष पूर्ण होने पर %संविधान दिवस पदयात्रा% की तैयारियों संबंधी बैठक हुई। मंलगवार 26 नवंबर को राजधानी भोपाल में संविधान दिवस पद-यात्रा का आयोजन किया जा रहा है। इसमें 2000 से अधिक युवाओं के शामिल होने की उम्मीद है। मंत्री श्री सारंग ने बताया कि संविधान दिवस पद-यात्रा शौर्य स्मारक से शुरू होकर बोर्ड ऑफिस चौराहा स्थित संविधान निर्माता डॉ. बी.आर. अम्बेडकर की प्रतिमा को नमन कर शौर्य स्मारक पर समापन होगी। उन्होंने पद-यात्रा के आयोजन के संबंध में जिला प्रशासन और पुलिस प्रशासन के अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिये। यात्रा खेल एवं युवा कल्याण विभाग के समन्वय में होगी। इसमें नेहरू युवा केन्द्र, राष्ट्रीय सेवा योजना, उच्च शिक्षा, स्कूल शिक्षा, चिकित्सा शिक्षा, तकनीकी शिक्षा के युवा शामिल होंगे। पद-यात्रा में खेल एवं युवा कल्याण के खिलाड़ी और आदिम जाति कल्याण विभाग के संबंधित छात्रावासों के

विद्यार्थी भी सम्मिलित होंगे। मंत्री श्री सारंग ने बताया कि संविधान दिवस पद-यात्रा मंगलवार 26 नवंबर को पूर्वाहन में आयोजित होगी। इसमें स्कूली और कॉलेज के बच्चे भी शामिल होंगे। मंत्री श्री सारंग ने आयोजन स्थल एवं रूट के आसपास आवश्यक साफ-सफाई आदि की व्यवस्था के लिये संबंधित को निर्देश दिये।

इसी प्रकार उन्होंने ट्रैफिक के सुचारू संचालन के लिये भी संबंधित को कहा। पद-यात्रा के दौरान पुलिस बैण्ड की व्यवस्था के भी निर्देश दिये गये। साथ ही पद-यात्रा के रूट पर आवश्यक पुलिस तैनाती और आयोजन स्थल पर पार्किंग की व्यवस्था करने को भी कहा गया। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि पद-यात्रा पूर्ण अनुशासन में और व्यवस्थित निकाली जाये। पद-यात्रा में हजारों लोग आये और बाबा साहेब के संविधान संबंधी स्लोगन और युवाओं को संविधान के प्रति जागरूक करने वाले संदेश दें। बैठक में अपर मुख्य सचिव श्री मनु श्रीवास्तव, संचालक श्री रवि कुमार गुप्ता, संयुक्त संचालक श्री बी.एल. यादव, जिला प्रशासन और पुलिस सहित अन्य संबंधित विभाग के अधिकारी उपस्थित थे।

मध्यप्रदेश में पहली बार जंगली हाथी की रेडियो कॉलरिंग

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उमरिया जिले के बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व क्षेत्र के एक नर जंगली हाथी को 20 नवम्बर को सफलतापूर्वक सेटेलाइट रेडियो कॉलर पहनाया गया। रेडियो कॉलर पहनाने के बाद जंगली हाथी को बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व के परिक्षेत्र ताला की बीट दमना के कक्ष क्रमांक 332 में छोड़ा गया। जंगली हाथी के रेडियो कॉलरिंग के समय बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व क्षेत्र संचालक, सहायक संचालक, वन्यप्राणी स्वास्थ्य अधिकारी, डब्ल्यूडब्ल्यूएफ के श्री साकेत भाले, डॉ. शुभांकर, डब्ल्यूसीटी के डॉ. प्रशांत देशमुख और विशेषज्ञ उपस्थित रहे। अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक वन्य जीव श्री एल. कृष्णमूर्ति ने बताया

कि मध्यप्रदेश में पहली बार जंगली हाथी की रेडियो कॉलरिंग की गई है। उन्होंने बताया कि यह हाथियों के विचरण, व्यवहार और आवास के क्षेत्र के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण कदम होगा। उल्लेखनीय है कि उक्त जंगली हाथी को 2 मार्च 2024 को वन परिक्षेत्र जयसिंह नगर, उत्तर शहडोल की बीट वन चाचर से रेस्क्यू किया गया था।

मंत्री श्री परमार की अध्यक्षता में डिजिटल यूनिवर्सिटी एवं एमपीआईटी स्थापना की बैठक हुई

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार की अध्यक्षता में मंत्रालय में संकल्प-2023 की परिकल्पना केंद्र सरकार के साथ मिलकर प्रदेश की पहली डिजिटल यूनिवर्सिटी की स्थापना के संबंध में बैठक हुई। मंत्री श्री परमार ने अधिकारियों के साथ व्यापक विचार मंथन किया। उन्होंने डिजिटल यूनिवर्सिटी की स्थापना के लिए व्यापक कार्ययोजना बनाने के लिए आवश्यक दिशा निर्देश दिए। संकल्प-2023 की परिकल्पना प्रदेश के प्रत्येक संभाग में मध्यप्रदेश इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमपीआईटी) की स्थापना के

संबंध में भी व्यापक विचार मंथन हुआ। मंत्री श्री परमार ने एमपीआईटी की स्थापना के लिए विभिन्न बिंदुओं पर समग्र विमर्श कर, विभागीय अधिकारियों को कार्य-योजना बनाने के लिए कहा। बैठक में प्रमुख सचिव उच्च शिक्षा श्री अनुपम राजन, सचिव तकनीकी शिक्षा श्री रघुराज राजेंद्रन, आयुक्त उच्च शिक्षा श्री निशांत बरबड़े, कुलगुरु राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय डॉ. राजीव त्रिपाठी, आईआईआईटी के डायरेक्टर डॉ. आशुतोष कुमार सिंह, कुलगुरु भोज विश्वविद्यालय डॉ. संजय तिवारी, डायरेक्टर एनआईटीटीआर भोपाल डॉ. सी सी त्रिपाठी एवं संचालक तकनीकी शिक्षा डॉ. वीरेंद्र कुमार सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

देश का सर्वश्रेष्ठ फिल्म अनुकूल राज्य है मध्यप्रदेश- प्रमुख सचिव शुक्ला

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड द्वारा गोवा में चल रहे 55वें भारतीय अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव (आई.एफ.एफ.आई) का गोवा में सहभागित कर प्रदेश में फिल्म शूटिंग संभावनाओं का प्रचार किया। प्रमुख सचिव पर्यटन व संस्कृति विभाग के प्रमुख सचिव और टूरिज्म बोर्ड के प्रबंध संचालक श्री शिव शेखर शुक्ला व अपर प्रबंध संचालक सुश्री बिदिशा मुखर्जी द्वारा फिल्म निर्माता, निर्देशक, अभिनेता व उद्योग से जुड़े हितधारकों से चर्चा कर प्रदेश में फिल्म परियोजनाओं की शूटिंग हेतु आंमत्रीत किया।

फिल्म महोत्सव के दौरान टूरिज्म बोर्ड द्वारा गुरुवार को एक नॉलेज सेशन आयोजित किया। %लाइट्स, कैमरा, सहयोग= मध्यप्रदेश में फिल्मांकन के लिए सरकार

और उद्योग साझेदारी% श्रृंखला में प्रमुख सचिव श्री शिव शेखर शुक्ला सहित फिल्म निर्देशक श्री अमर कौशिक, आमिर खान प्रोडक्शंस की सीईओ सुश्री अपर्णा पुरोहित, अभिनेता श्री अभिषेक बनर्जी, अभिनेता सुश्री नितांशी गोयल, अभिनेता श्री स्पर्श श्रीवास्तव और अभिनेता-निर्माता सुश्री वाणी टीकू त्रिपाठी ने अपने विचार व्यक्त किये। इस दौरान प्रमुख सचिव श्री शुक्ला ने प्रदेश में फिल्म शूटिंग को प्रोत्साहित करने और राज्य को एक प्रमुख फिल्म निर्माण गंतव्य के रूप में स्थापित करने के उद्देश्य से म.प्र. फिल्म टूरिज्म पॉलिसी के विभिन्न बिंदुओं से अवगत कराया।

प्रमुख सचिव श्री शुक्ला ने कहा, मध्य प्रदेश को 2017 और 2020 के लिये दो बार फिल्म अनुकूल राज्य का राष्ट्रीय पुरस्कार जीतने पर गर्व है। प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, जीवंत वन्य जीवन और पवित्र आध्यात्मिक स्थलों से राज्य के विविध स्थान एक प्राकृतिक फिल्म सेट का रूप देते है। उन्होंने हाल ही में शूट की गई फिल्मों व वेब सीरिज (स्त्री-2, भूल भुलैया-3, लापता लेडीज, पंचायत, महारानी, गुल्लक आदि) के उदाहरण देकर राज्य की लोकप्रियता का उल्लेख किया। उन्होंने राज्य सरकार की ओर से फिल्म निर्माताओं को दी जाने वाली आर्थिक सहायता का विवरण दिया और शूटिंग की मंजूरी के लिए सिंगल-विंडो क्लीयरेंस जैसी सरल और पारदर्शी प्रक्रिया की जानकारी दी। श्री शुक्ला ने बताया कि, प्रदेश के ऐतिहासिक स्थलों, राष्ट्रीय उद्यानों, और ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंच आसान है। उक्त क्षेत्रों में सभी आवश्यक सुविधाएं जैसे बिजली, इंटरनेट, और परिवहन की व्यवस्था उपलब्ध है।

100वां तानसेन समारोह- 'सिटी ऑफ म्यूजिक' ग्वालियर में 15 दिसंबर से...

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। ग्वालियर में एक दौर ऐसा भी रहा है कि जब गोपाचल पर्वत से पत्थर लुढ़कते हुए नीचे की ओर आते थे, तो उनमें भी संगीत की खनक सुनाई देती थी। सदियों पुरानी शास्त्रीय संगीत परंपरा की धरोहर रहा यह शहर इस वर्ष तानसेन समारोह के शताब्दी वर्ष के उत्सव में सराबोर रहेगा। यूनेस्को द्वारा 'सिटी ऑफ म्यूजिक' के रूप में घोषित ग्वालियर में 15 दिसंबर से 19 दिसंबर तक संगीत सम्राट तानसेन की स्मृति में तानसेन समारोह मनाया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 15 दिसंबर को ग्वालियर में तानसेन समारोह का शुभारंभ करेंगे।

उल्लेखनीय है कि तानसेन समारोह ग्वालियर के पास ही बसे बेहट गांव में आयोजित किया जाता है। बेहट गांव संगीत सम्राट तानसेन का जन्म स्थान है। सदियों से बह रही झिलमिल नदी के किनारे होने वाला यह समारोह शास्त्रीय संगीत की मधुर तान, पक्षियों का मधुर मंद कलरव और नदी में बहते पानी की आवाज का मधुर रस एक अनूठी अध्यात्मिक अनुभूति का अहसास कराता है। शताब्दी वर्ष के मुख्य समारोह में देश के 150 ख्यातिलब्ध कलाकार अपनी सांगितिक प्रस्तुतियां देंगे। इसके अलावा विश्व संगीत कार्यक्रम अंतर्गत 10 विदेशी कलाकार अपनी प्रस्तुतियां देंगे। साथ ही 550 से अधिक दुर्लभ वाद्ययंत्रों का प्रदर्शन एक प्रमुख आकर्षण होगा, यह प्रदर्शनी तानसेन समाधि परिसर में लगाई जाएगी। प्रमुख सचिव पर्यटन व संस्कृति विभाग श्री शिव शेखर शुक्ला ने बताया कि, संगीत सम्राट तानसेन का अखिल भारतीय शताब्दी समारोह गमक के साथ 14 दिसंबर को शुरू होगा। इस अवसर पर संगीत के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली विभूतियों को अलंकृत किया जाएगा।

युग परिवर्तन का अकाट्य सिद्धांत - मूल सुधार और भूल सुधार-मंत्री पटेल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। डॉ. हरिसिंह गौर की 155वी. जन्म जयंती पर सागर जिला गौर उत्सव मना रहा है। इस अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में पंचायत एवं ग्रामीण विकास व श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल गुरुवार को शामिल हुए। उन्होंने कहा कि यदि आप पीढ़ियों तक अपना यश चाहते हैं तो शिक्षा का मंदिर तैयार करें और इसे एक संकल्प के रूप में पूर्ण करें। उन्होंने कहा कि एक बार किए गए संकल्प में फिर विकल्प का स्थान नहीं रहता। उन्होंने कहा कि नई पीढ़ी संकल्प की ताकत को समझे, विचार के प्रति समर्पण की ताकत को समझे। हम जो संकल्प जीवन में लें उसके प्रति विकल्प

कभी स्वीकार न करें। डॉक्टर सर हरि सिंह गौर का जीवन भी की बड़े संकल्पों की प्रतिमूर्ति है। हम सभी को उनके प्रति कृतज्ञ होना चाहिए। डॉ. हरिसिंह गौर जैसे बहुआयामी व्यक्तित्व हमारे जीवन में न केवल प्रेरणा स्रोत के रूप में कार्य करते हैं बल्कि सामाजिक सरोकार और समाज के प्रति अपने दायित्व, अपनी जिम्मेदारी की ओर भी इंगित करते हैं।

मंत्री श्री पटेल ने कहा कि डॉ. गौर साहब अधिवक्ता, लेखक, शिक्षाविद्, समाज सुधारक, दानी और ऐसे व्यक्तित्व के धनी थे जो आगे आने वाली परिस्थितियों को देख सकते थे। आजादी के 75 साल बाद भी हम महसूस कर सकते हैं कि जो पाठ्यक्रम, सुविधाएं सागर केंद्रीय विश्वविद्यालय में है, वह देश के अन्य बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों में भी नहीं, यह हमारे लिए गौरव की बात है। उन्होंने डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय को केंद्रीय दर्जा प्राप्त होने की बात को याद करते हुए कहा कि शुरुआत में इस बात को समझ नहीं पाए कि केंद्रीय विश्वविद्यालय बन जाने पर डॉ. हरिसिंह गौर की मूल मंशा प्रभावित होगी। डॉ. गौर की मंशा थी कि बुंदेलखंड के गरीब, अनपढ़ व्यक्ति को संसाधन प्राप्त हों। परंतु जब मध्यप्रदेश के सागर में राजकीय विश्वविद्यालय बनाने के फैसले ने डॉ. गौर की मूल भावना को पुन: जीवित कर दिया।

43वें भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में मध्यप्रदेश मंडप बना आकर्षण का केंद्र

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। दिल्ली स्थित भारत मंडपम में चल रहे 43वें अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में मध्यप्रदेश मंडप आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। मंडप में मेले की थीम 'विकसित भारत@2047' के अनुरूप प्राचीन सांस्कृतिक एवं कलात्मक धरोहर के साथ तेजी से विकसित होते मध्यप्रदेश के स्वरूप को प्रदर्शित किया गया है। मंडप में प्रदेश के विकास और समृद्धि के डिजिटल निरूपण के साथ ही प्रदेश के पर्यटन गंतव्य, जनजातीय एवं लोक-कला तथा स्थापत्य कला को मनमोहक तरीके से प्रदर्शित किया गया है।

मंडप में प्रवेश करते ही होलोग्राम आधारित विकास के 4 स्तंभ दर्शाए गए हैं। अत्याधुनिक तकनीक का प्रयोग करते हुए कांच के स्तंभों के भीतर होलोग्राम के माध्यम से युवा शक्ति, नारी शक्ति, गरीब कल्याण और किसान कल्याण मिशन प्रदर्शित किए गए हैं। ये 4 स्तंभ आगंतुकों, विशेषकर युवाओं और बच्चों को काफी आकर्षित कर रहे हैं। डिजिटल इन्फोपैनल्स के माध्यम से प्रदेश में निवेश आकर्षित करने के उद्देश्य से आयोजित की जा रहीं रीजनल इंडस्ट्रीज कॉन्क्लेव, ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट और उद्योग वर्ष की परिकल्पनाओं को प्रमुखता से दर्शाया गया है। मंडप के प्रवेश द्वार पर सांची स्तूप, ग्वालियर किला, खजुराहो की मूर्तिकला, चंदेरी द्वार और अमरकंटक कुंड दर्शाए गए हैं। मंडप की बाहरी हिस्से में प्रदेश की 4 प्रमुख जनजातियां - गोंड, भील, सहारिया और बैगा के रहन-सहन और वेशभूषा की विस्तृत जानकारी दी गई है। मंडप के दूसरी ओर ओंकारेश्वर फ्लोटिंग सोलर पावर पार्क, गांधी सागर डैम और रीवा अल्ट्रा-मेगा सौर ऊर्जा संयंत्र जैसी परियोजनाओं को प्रदर्शित किया गया है। मंडप के भीतरी हिस्से में ऊपर की ओर प्रदेश के प्रमुख गंतव्य स्थलों के पैनल्स लगाए गए हैं। मंडप में प्रदेश के भौगोलिक संकेतक उत्पादों की प्रदर्शनी भी लगाई गई है। प्रदर्शनी में चंदेरी साड़ी, वारासिवनी साड़ी, महेश्वरी साड़ी, बेलमैटल शिल्प, लौह-अयस्क शिल्प, जबलपुर पत्थर शिल्प, गोंड पेंटिंग्स, बाग प्रिंट्स, शरबती गेहूं, रतलाम सेंव, रियावन लहसुन, मुरैना गजक, उज्जैन बटिक प्रिंट, इंदौर के चमड़े के खिलौने, कड़कनाथ चिकन, सुंदरजा आम, चित्रौर चावल और ग्वालियर के गलीचों को दिखाया गया है। मंडप में प्रदेश के शासकीय विभागों, निगम और मंडलों ने भी भाग लिया है। पर्यटन विभाग द्वारा वर्चुअल रियलिटी के माध्यम से आगंतुकों को खजुराहो, सांची, उज्जैन, मांडू, महेश्वर, जैसे पर्यटन स्थलों का आभासी अनुभव कराया जा रहा है। विभाग का डिजिटल टचस्क्रीन डैशबोर्ड आगंतुको को पर्यटन से संबंधित समस्त जानकारी उपलब्ध करा रहा है। 19 नवंबर, 2024 को मेले में आयोजित मध्यप्रदेश दिवस समारोह में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने पर्यटन विभाग को शासकीय श्रेणी में बेस्ट स्टॉल डिस्प्ले के पुरस्कार से सम्मानित किया है। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम विभाग के स्टाल में ओडीओपी बिजनेस डायरेक्टरी का वितरण किया जा रहा है।

मध्यप्रदेश माटीकला बोर्ड के स्टॉल में टैराकोटा से बने दिए, प्लांटर, खिलौनों और सजावटी वस्तुओं की बिक्री की जा रही है। मंडप में श्री राजकुमार और श्रीमती पुष्पा प्रजापति माटीकला का सजीव प्रदर्शन कर रहे हैं और इनके स्टॉल में आगंतुक अपने हाथों से चाक चलाकर टैराकोटा बर्तन बनाने का अनुभव प्राप्त कर रहे हैं।

दिशा की बैठक में योजनाओं के क्रियान्वयन की सांसद ने की समीक्षा

योजनाओं का पारदर्शी तरीके के प्रभावी क्रियान्वयन हो जिससे आम लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आए: सांसद

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सांसद डॉ. राजेश मिश्रा द्वारा जिला विकास समन्वय एवं अनुश्रवण समिति (दिशा) की बैठक में केंद्र शासन द्वारा संचालित विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं के संचालन की विस्तृत समीक्षा की गई। सांसद ने कहा कि यह हम सभी की जिम्मेदारी है कि योजनाओं का पारदर्शी तरीके के प्रभावी क्रियान्वयन हो जिससे आम लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आए और वह सम्मान के साथ जीवन व्यतीत कर सकें।

लोगों के जीवन में सहूलियत देने के लिए केंद्र सरकार तथा राज्य सरकार द्वारा कई जनकल्याणकारी योजनाओं का संचालन किया जाता है, इनका लाभ प्रत्येक पात्र हितग्राही को दिलाना हमारी जवाबदेही निर्धारित करती है।

सांसद डॉ. राजेश मिश्रा ने ऊर्जा विभाग की समीक्षा करते हुए कहा कि केन्द्र सरकार द्वारा जो विद्युती योजनाएं संचालित हैं उनका व्यापक प्रचार प्रसार किया जाना सुनिश्चित करें। पूर्ण कार्यों एवं प्रगतिरत कार्यो की जानकारी जनप्रतिनिधियों से भी साझा करें तथा प्रगतिरत कार्यों में सतत निगरानी रखी जाए। इसके साथ ही उन्होने कहा कि जिले का कोई भी गांव विद्युतीकरण से वंचित न रहे। जले हुए ट्रांसफार्मर को तत्काल प्रभाव से बदला जाये जिससे बोनी के समय में किसानों को पानी के लिए भटकना नहीं पड़े। उन्होंने कहा कि योजनाओं के क्रियान्वयन में यदि किसी भी प्रकार की लापरवाही पाई जाती हैं तो दोषियों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही की जाए।

सांसद डॉ. मिश्रा ने सड़क सुरक्षा एवं यातायात विभाग की समीक्षा करते हुए कहा कि ब्लैक स्पाट एरिया को चिन्हाकित कर उन पर कड़ी निगरानी रखे तथा सुरक्षात्मक उपाय किये जाये। ओवर लोड वाहनों प्रमुख तौर पर रेत के ओवर लोड वाहनों के ऊपर 15 दिवसीय अभियान चलाकर चलानी कार्यवाही की जाये। इसके साथ ही एनएच 39 सीधी से सिंगरौली रोड की समीक्षा करते हुए कार्य में अपेक्षित प्रगति नहीं होने पर अप्रसन्नता व्यक्त की है। उन्होने कहा कि विभाग द्वारा कार्यों में सतत निगरानी रखी जाए और हो रहे निर्माण कार्यों में कार्य पूर्ण नहीं होने पर राशि का भुगतान नहीं करने के निर्देश दिए हैं। जल संसाधन विभाग की समीक्षा करते हुए सांसद डॉ. मिश्रा ने कहा कि नहरों की साफ सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाये तथा 3 दिवस के अंदर नहरों मे पानी छोड़ा जाये जिससे किसानों को पानी के लिए परेशान नहीं होना पड़े। इसी प्रकार शिक्षा विभाग की समीक्षा करते हुए निर्देशित किया गया है कि सभी विद्यालयो में पेयजल, शौचालय एवं बिजली की आपूर्ति शत प्रतिशत पूर्ण हो यह सुनिश्चित करें। स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा करते हुए उन्होने कहा कि लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध करायें तथा 108 एम्बुलेंस एवं शव वाहनों पर पर सतत निगरानी रखे जिससे लोगो को भटकना नहीं पड़े तथा कंडम हो चुकी गाडियों को जल्द से जल्द नीलामी का कार्यवाही करना सुनिश्चित करें।

कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी ने कहा कि शासन की योजनाओं का क्रियान्वयन पूरी तत्परता से किया जा रहा है। उन्होने आश्वस्त किया है कि प्रत्येक लाभार्थी को सहजता से योजना का लाभ सुनिश्चित किया जायेगा।

बैठक में जिला पंचायत अध्यक्ष मंजू सिंह, जनपद अध्यक्ष सीधी धर्मेन्द्र सिंह परिहार, पुलिस अधीक्षक डॉ रविन्द्र वर्मा, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अंशुमन राज, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अरविन्द श्रीवास्तव, उपखण्ड अधिकारी गोपद बनास नीलेश शर्मा सहित संबंधित विभागीय अधिकारी एवं समिति के अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

श्रीनिवास तिवारी की प्रतिमा होगी स्थापित

मीडिया ऑडीटर, जवा निप्र। श्री निवास तिवारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय नगवां जवा जिला रीवा के प्रांगण में प्रदेश के कद्दावर एवं यशस्वी नेता श्रीनिवास तिवारी की प्रतिमा स्थापित होगी, जिसका अनावरण फरवरी 2025 में होने वाले अमर शहीद कबड्डी प्रतियोगिता एवं श्रीनिवास तिवारी स्मृति प्रसंग के दौरान किया जाना है। प्रतिमा स्थापना समिति के संयोजक शिव बालक पांडेय एवं सह संयोजक बालेंद्र प्रसाद मिश्रा ने संयुक्त विज्ञप्ति जारी कर कहा है कि प्रतिमा स्थापना हेतु लिये गये शुभ संकल्प के अनुसार तिवारी जी के जयंती 17 सितंबर की स्मृति मानकर 17 सदस्य एवं पुण्यतिथि 19 जनवरी को याद करते हुए एक संयोजक एवं एक सहसंयोजक को मिलाकर 19 की संख्या में क्षेत्र के उत्साही एवं ऊर्जावान सदस्य प्रतिमा स्थापना समिति में शामिल किए गए है। प्रतिमा निर्माण की जिम्मेदारी मकराना, राजस्थान के कुशल कारीगर को दिनांक 21 नवंबर 2024 को सौंप दी गई। इस संबंध में यह भी जानकारी दी गई की प्रतिमा अनावरण के आयोजन में पूरे जिले संभाग एवं प्रदेश से दस हजार की संख्या में समर्थकों एवं आम जनों को आमंत्रित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। शीघ्र ही सभी सदस्यों की एक बैठक आहूत कर इस संबंध में विस्तृत रूपरेखा एवं अनावरण की तिथि निश्चित की जाएगी।

लोगों को बीमा व सायबर क्राईम से बचने किया गया जागरूकता

मीडिया ऑडीटर, जवा निप्र। रीवा जिले के सिरमौर तहसील अंतर्गत ग्राम पंचायत उमरी में आज अपराजिता महिला सेवा संगठन सिरमौर की ब्लाक कोऑर्डिनेटर शिवानी दहिया द्वारा वित्तीय साक्षरता का आयोजन ग्राम पंचायत भवन उमरी में किया गया, जिसकी अध्यक्षता जिला कोऑर्डिनेटर वित्तीय साक्षरता जिला रीवा एवं मऊगंज संतोष कुमार मिश्र ने किया,वहीं विशिष्ट अतिथि के तौर पर मनोज सिंह भी उपस्थित रहे। संचालन ग्राम पंचायत उमरी के सचिव प्रदीप सिंह के द्वारा किया गया। कार्यक्रम की आयोजक शिवानी दहिया ने अतिथियों का परिचय कराया, तत्पश्चात कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे जिला कोऑर्डिनेटर मिश्र ने सरकार की विभिन्न योजनाएं जैसे.. प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा व पेंशन योजना के बारे में बताया। मिश्र ने बताया कि आज हर व्यक्ति के पास मोबाइल फोन है, इंटरनेट चलाता है, लेकिन सायबर ठगी का शिकार हो रहे हैं, मोबाइल के माध्यम से ही लोग फ्रॉड एवं ठगी के शिकार हो रहे हैं, कोई अजनबी व्यक्ति आपके पास फोन करता है और कोई लालच या प्रलोभन या आपसे कोई गोपनीय जानकारी मांगता है, और आप ठगी का शिकार हो जाते है, इसलिए मोबाइल में आए किसी ऐसे व्यक्ति का फोन जो आपकी पर्शनल जानकारी मांग रहा है, बिल्कुल जानकारी साझा ना करें, हो सके तो फोन कट कर दें। कार्यक्रम में महिला बाल विकास की कार्यकर्ता संगीत गौतम, शीला चतुर्वेदी, कमला कुशवाहा, सबिता मिश्रा, शकुंतला तिवारी, शुक्रबती त्रिपाठी, दिनेश कुमार मिश्रा, विनय सिंह, सर्वेश कुशवाहा सहित सैकड़ो लोग उपस्थित रहे।

बस ने स्कूटी को टक्कर मारी, 100 मीटर घसीटा

7 साल की बच्ची और युवती की मौत, दो दिन पहले हुई थी सगाई

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर निप्र। छतरपुर के मोरवा तिराहा पर शुक्रवार को एक बस ने स्कूटी को टक्कर मार दी। स्कूटी सवार 7 साल की बच्ची और उसकी बुआ की मौत हो गई। बच्ची की दादी गंभीर रूप से घायल है। जिन्हें प्राइवेट हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया है।

घटना के बाद पुलिस ने मृतक का पंचनामा बनाकर मामले की जांच पड़ताल शुरू कर दी है। फरार बस ड्राइवर की तलाश की जा रही है।

जानकारी के मुताबिक बसारी दरवाजा निवासी 6 लोग दो बाइक से महोबा रोड स्थित एक फार्म हाउस घूमने गए थे। लौटते समय छतरपुर से आ रही तेज रफ्तार बस (एमपी16पी314) ने सामने से स्कूटी में टक्कर मार दी, जिससे स्कूटी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। बस स्कूटी को करीब 100 मीटर तक घसीटते हुए एक खेत के अंदर पहुंच गई।

दो दिन पहले हुई थी इंगेजमेंट: घटना में 7 साल की रिया पिता प्रणव विश्वास और उसकी बुआ बुआ स्वीटी (30) पिता अरविंद सिन्हा की मौत हो गई। स्वीटी की 2 दिन पहले भोपाल में सगाई हुई थी। वहीं, बच्ची की दादी मुन्नी (49) पिता हरीश विश्वास निवासी घायल है। स्वीटी के पिता अरविंद विश्वास सरानी दरवाजा के पास चांद सी हॉस्पिटल में प्राइवेट डॉक्टर हैं। वहीं, रिया के पिता दिल्ली में रहकर डॉक्टरी की प्रैक्टिस करते हैं।

भाई बोला- दो दिन पहले भोपाल में हुई सगाई: स्वीटी के भाई डॉ. सुमित सिन्हा ने बताया कि स्कूटी मेरी बहन चला रही थी। उसने एक तेज रफ्तार बस को आता हुआ देखकर सड़क के किनारे पर खड़ी हो गई। इतने में रॉन्ग साइड से आ रही बस ने टक्कर मार दी। बस स्कूटी को घसीटते हुए खेत तक ले गई। बहन की दो दिन पहले भोपाल में इंगेजमेंट हुई थी। कल वापस आए थे।

एडिशनल एसपी विक्रम सिंह ने बताया कि घटना के बाद से बस ड्राइवर फरार है। उसकी तलाश की जो रही है। बस को जब्त कर लिया गया है।

शहर के वार्ड 10 से हटाया अवैध कब्जा

एसडीएम के आदेश पर तहसीलदार ने की कार्रवाई, रास्ता किया क्लियर

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी शहर के वार्ड 10 के मोरिसन स्कूल के सामने निजी जमीन पर किए अवैध कब्जे को तहसीलदार ने शुक्रवार को जमींदोज कर दिया। यहां करीब 300 लोगों की आबादी को निकलने के लिए कोई रास्ता नहीं था। जहां निजी भूमि के मालिक विक्रम सिंह ने अपने जमीन से 10 फीट रास्ता देने के लिए स्वीकृति जाहिर की थी। लेकिन उस रास्ते पर कई लोगों ने अपनी बाड़ी बना दी थी। साथ ही निर्मल सिंह ने बाउंड्री वॉल का निर्माण कार्य किया था जिससे यहां से निकलने वालों को समस्या हो रही थी। जिसके बाद शुक्रवार की दोपहर करीब 2 बजे प्रशासन ने उस अतिक्रमण को हटा दिया और आम रास्ते को खोल दिया है।

एसडीएम के आदेश पर कार्रवाई: तहसीलदार जानवी शुक्ला ने बताया है कि हमारे पास आवेदन आया था। जिसको मैंने अपने वरिष्ठ अधिकारी एसडीएम को फॉरवर्ड कर दिया था। एसडीएम के आदेशानुसार इस जमीन के अतिक्रमण को हटाने की कार्रवाई की गई है। इसमें पुलिस बल का भी सहयोग रहा है। यह अतिक्रमण भूमि करीब 0.27 हेक्टेयर थी। जिस भूमि से अतिक्रमण को हटा दिया गया है।

लोगों को बीमा व सायबर क्राईम से बचने किया गया जागरूकता

मीडिया ऑडीटर, जवा निप्र। रीवा जिले के सिरमौर तहसील अंतर्गत ग्राम पंचायत उमरी में आज अपराजिता महिला सेवा संगठन सिरमौर की ब्लाक कोऑर्डिनेटर शिवानी दहिया द्वारा वित्तीय साक्षरता का आयोजन ग्राम पंचायत भवन उमरी में किया गया, जिसकी अध्यक्षता जिला कोऑर्डिनेटर वित्तीय साक्षरता जिला रीवा एवं मऊगंज संतोष कुमार मिश्र ने किया,वहीं विशिष्ट अतिथि के तौर पर मनोज सिंह भी उपस्थित रहे। संचालन ग्राम पंचायत उमरी के सचिव प्रदीप सिंह के द्वारा किया गया। कार्यक्रम की आयोजक शिवानी दहिया ने अतिथियों का परिचय कराया, तत्पश्चात कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे जिला कोऑर्डिनेटर मिश्र ने सरकार की विभिन्न योजनाएं जैसे.. प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा व पेंशन योजना के बारे में बताया। मिश्र ने बताया कि आज हर व्यक्ति के पास मोबाइल फोन है, इंटरनेट चलाता है, लेकिन सायबर ठगी का शिकार हो रहे हैं, मोबाइल के माध्यम से ही लोग फ्रॉड एवं ठगी के शिकार हो रहे हैं, कोई अजनबी व्यक्ति आपके पास फोन करता है और कोई लालच या प्रलोभन या आपसे कोई गोपनीय जानकारी मांगता है, और आप ठगी का शिकार हो जाते है, इसलिए मोबाइल में आए किसी ऐसे व्यक्ति का फोन जो आपकी पर्शनल जानकारी मांग रहा है, बिल्कुल जानकारी साझा ना करें, हो सके तो फोन कट कर दें। कार्यक्रम में महिला बाल विकास की कार्यकर्ता संगीत गौतम, शीला चतुर्वेदी, कमला कुशवाहा, सबिता मिश्रा, शकुंतला तिवारी, शुक्रबती त्रिपाठी, दिनेश कुमार मिश्रा, विनय सिंह, सर्वेश कुशवाहा सहित सैकड़ो लोग उपस्थित रहे।

कार चोरी में फरार चौथा आरोपी गिरफ्तार

आरोपी 15 दिन पहले ही रीवा जेल से छूटा था

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर निप्र। कोतमा पुलिस ने कार चोरी में फरार चौथे आरोपी को रीवा से गिरफ्तार कर लिया है। चार लोगों ने कोतमा में घर के बाहर खड़ी कार चुरा ली थी। तीन आरोपी पहले ही पकड़े जा चुके थे। आरोपी अड्डू उर्फ आरिफ खान 15 दिन पहले ही चोरी के आरोप में जेल से रिहा हुआ था, जिसे कोतमा पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया।

कोतमा थाना प्रभारी सुंदरेश मरावी के मुताबिक, 13 फरवरी को मोहम्मद इदरीश कुरैशी ने चोरी की रिपोर्ट दर्ज कराई थी। उसने बताया था कि 12 फरवरी की रात उसने घर के सामने ईको मारुति कार नंबर सीजी 10एएम0532 खड़ी की थी। सुबह देखा तो मारुति कार नहीं थी। पुलिस ने संदेह के आधार पर मोहम्मद शाहरुख खान, मोहम्मद जाकिर और मोहम्मद सिद्दीकी को गिरफ्तार किया। पूछताछ करने पर आरोपियों ने जुर्म स्वीकार कर लिए। पुलिस ने कार को भी जब्त कर लिए। मामले के एक आरोपी अड्डू उर्फ आरिफ खान फरार था। आरोपी के खिलाफ रीवा जिले के बिछिया थाने में मोटरसाइकिल चोरी के तीन केस दर्ज हैं। वह 15 दिन पहले ही रीवा जेल से छूटा था।

नराकास सीधी की समीक्षा बैठक आयोजित

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति सीधी की छमाही समीक्षा बैठक का आयोजन नराकास अध्यक्ष बृजेश कुमार श्रीवास्तव की अध्यक्षता में यूनियन बैंक ऑफइंडिया के आरसेटी में आयोजित किया गया। बैठक को संबोधित करते हुए उन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन में नराकास की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया। सदस्य कार्यालयों को अधिक से अधिक हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। केन्द्रीय कर्मचारी होने के नाते राजभाषा को बढ़ावा देना हम सबकी संवैधानिक जिम्मेदारी है। वर्तमान समय में राजभाषा का वैश्विक पटल पर अनवरत रूप से बढ़ना अत्यंत प्रसन्नता का विषय होने की बात कही। इस दौरान पीएम केन्द्रीय विद्यालय सीधी की प्राचार्य अंशु त्यागी द्वारा नराकास सीधी की पत्रिका प्रकाशन का प्रस्ताव पेश रखा गया। प्रस्ताव को सभी सदस्यों के द्वारा सर्वसम्मति से पारित किया गया।

हरियाणा सरकार के निर्णय ने जगाई अतिथि विद्वानों में उम्मीद

सैनी सरकार ने अतिथि विद्वानों को किया नियमित, अब मोहन सरकार की बारी

मीडिया ऑडीटर, रीवा निप्र। हरियाणा भाजपा सरकार के एक निर्णय ने प्रदेश के अतिथि विद्वानों में उम्मीद जगा दी है। वकायदा प्रस्ताव कैबिनेट से पारित करते हुए जो उच्च शिक्षा विभाग में पिछले पांच वर्षों से काम कर रहे थे रिक्त पदों के विरुद्ध अतिथि विद्वान उनको अनुभव एवं योग्यता के अनुसार उन्ही पदों में स्थाई नियुक्ति दी जाएगी। प्राप्त जानकारी के मुताबिक ये वादा हरियाणा भाजपा ने चुनाव से पहले किया था जैसे ही सरकार बनी उसका इम्प्लीमेंटेसन शुरू हो गया है।इसी निर्णय को लेकर मध्य प्रदेश के अतिथि विद्वानों ने मोहन सरकार से अपना वादा पूरा करने के लिए मुहिम छेड़ दी है।

शिवराज एवं मोहन भी कर चुके हैं महापंचायत में घोषणा

विधानसभा चुनाव 2023 के ठीक पहले 11 सितंबर को मुख्यमंत्री निवास पर हुई ऐतिहासिक महापंचायत में पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान एवं उस समय के विभाग प्रमुख उच्च शिक्षा मंत्री पूरे उच्च शिक्षा विभाग के महकमें के साथ घोषणा किये थे कि "लंबे समय से काम कर रहे रिक्त पदों के विरुद्ध अतिथि विद्वानों को बाहर नही किया जाएगा"लेकिन आज तक इस लाइन इस घोषणा को पूरा नही किया गया।विभगीय आदेश जारी होते ही अतिथि विद्वानों की हवाइयां उड़ने लगी।कि इतना बड़ा झूठे वादे कैसे करते हैं इतने बड़े नेता।अब हरियाणा सरकार के निर्णय से विद्वानों ने मांग तेज कर दी है।

वहीं अतिथि विद्वान महासंघ के जिलाध्यक्ष डॉ पुष्पराज सिंह एवं संभागीय संयोजक डॉ प्रमोद तिवारी ने बताया कि पूरे प्रदेश के अतिथि विद्वानों को संघ ने अल्टीमेटम जारी कर दिया है गूगल मीट करके मीटिंग करके की प्रदेश सरकार से अनुरोध करें लगातार की अब समय आ गया है कि रिक्त पदों के विरुद्ध वर्षों से कार्य करने वाले अतिथि विद्वानो को स्थाई/नियमित/समायोजन करें एवं फिक्स मासिक वेतन दें जो घोषणा हो चुकी थी।

इस संबंध में डॉ आशीष पांडेय, प्रदेश मीडिया प्रभारी महासंघ ने कहा कि, मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री, विभगीय मंत्री एवं शीर्ष अधिकारियों को संवेदनशीलता के साथ अतिथि विद्वानो के हित मे निर्णय लेना चाहिए।

फ़िक्स मासिक वेतन एवं स्थाई/नियमित/समायोजन करना चाहिए जिन रिक्त पदों में विद्वान काम करते आ रहे हैं वर्षों से।हरियाणा सरकार का निर्णय काबिले तारीफ़ है,मध्य प्रदेश सरकार को भी ऐसे ही ऐतिहासिक निर्णय लेना चाहिए।

नपा कर्मचारियों के सामने पलटाया सब्जी ठेला

रेहड़ी वाले ने लगाया फ्री सब्जी लेने का आरोप, सीएमओ ने की थाने में शिकायत

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर निप्र। नगर पालिका कोतमा ने सब्जी व्यवसायियों को सड़क से हटाया तो नाराज रेहड़ी वाले ने ठेला ही पलटा दिया। जिसका वीडियो भी सोशल मीडिया में वायरल हो रहा हैं। वायरल वीडियो गुरुवार का बताया जा रहा हैं। कोतमा नगर पालिका कर्मचारियों और कोतमा पुलिस ने ट्रैफिक को व्यवस्थित करने के उद्देश्य से मुख्य चौराहे की सड़क से सब्जी के ठेलों को हटाने और चौपाटी में शिफ्ट करने की कार्रवाई कर रहीं थी। तो नाराज रेहड़ी वाले ने गुस्से में अपना ठेला सड़क पर पलटा दिया। जिससे सब्जी सड़क पर बिखर गई। इसका वीडियो सोशल मीडिया में भी वायरल हो रहा है।

फ्री सब्जी लेते हैं नपा कर्मचारी: वायरल वीडियो में ठेला लगाने वाले सब्जी व्यापारी पुरुषोत्तम साहू बता रहे हैं कि नगर पालिका के कर्मचारी फ्री में ही उनकी सब्जी ले लेते हैं। मना करने के बाद भी,वह सब्जी फ्री में ही ले जाते हैं। नगर पालिका के द्वारा जबरदस्ती ही उनके ठेले को हटाए जा रहा है।

गाली-गलौज की शिकायत दर्ज: साथ ही कोतमा नगर पालिका सीएमओ प्रदीप झारिया ने सब्जी व्यवसायी के खिलाफ कर्मचारियों से गाली-गलौज की थाने पर शिकायत भी दर्ज कराई है। पुलिस जल्द ही आरोपी पर कार्रवाई करेगी।

स्वास्थ्य समिति की बैठक में कलेक्टर बोले, गर्भवती के रजिस्ट्रेशन में गड़बड़ी हुई तो आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की सेवा समाप्त

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली निप्र। सिंगरौली में गर्भवती महिलाओं का पंजीयन अगर सही स्थिति में पोर्टल पर दर्ज नहीं किया गया तो आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की सेवाएं समाप्त कर दी जाएंगी।

यह निर्देश शुक्रवार को सिंगरौली कलेक्टर ने स्वास्थ्य समिति की बैठक में दिए। दरअसल, गर्भवती महिलाओं के पंजीयन की स्थिति पोर्टल पर अप्रैल से अक्टूबर 2024 तक देखी गई, जिसमें पाया गया कि आशा कार्यकर्ताएं और आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं ने इस पर ठीक तरीके से काम नहीं किया है। इस पर नाराजगी जताते हुए कलेक्टर ने सभी बीएमओ और परियोजना अधिकारियों सहित महिला बाल विकास अधिकारी को निर्देश दिए कि काम में लापरवाही बरतने वाली आशा कार्यकर्ता तथा आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को अलग करने की कार्रवाई करें। बैठक में निर्देश दिए गए कि गर्भवती महिलाओं का निर्धारित समय पर स्वास्थ्य परीक्षण भी कराया जाना सुनिश्चित किया जाए और शत प्रतिशत संस्थागत प्रसव भी सुनिश्चित कर लें।

बैठक में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी गजेंद्र सिंह नागेश, सीएमएचओ एनके जैन, सिविल सर्जन देवेंद्र सिंह, परियोजना अधिकारी महिला एवं बाल विकास शैलेंद्र साकेत, आरपी सिंह, डीपीएम सुधांशु चतुर्वेदी सहित स्वास्थ्य एवं महिला बाल विकास विभाग के कई सुपरवाइजर भी मौजूद थे।

स्कूल के पास मिली लाश, शरीर पर चोट के निशान नहीं, पहचान नहीं हो पाई

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी जिला मुख्यालय से 6 किलोमीटर दूर ग्राम पनवार में स्कूल के पास एक अज्ञात व्यक्ति की लाश मिली है। जानकारी लगते ही शुक्रवार सुबह करीब 11: 30 बजे जमोड़ी पुलिस पहुंची। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए जिला अस्पताल भेजा है। पुलिस ने बताया कि मृतक के पैरों में स्पोर्ट के जूते और नीले कलर का जींस के साथ हल्की गुलाबी कलर की शर्ट पहने था। शरीर पर चोट के निशान नहीं मिले हैं। मृतक की पहचान के लिए सभी थानों और चौकियों में तस्वीर भेजी गई है। फिलहाल जांच जारी है।

पेड़ से लटकी मिली अधेड़ की लाश

गांव के चरवाहे ने सबसे पहले देखा शव, ग्रामीणों ने पुलिस को दी जानकारी

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सीधी के चुरहट थाना क्षेत्र में सेमरिया पुलिस चौकी अंतर्गत गेदुरा गांव में 50 साल के व्यक्ति की लाश आम के पेड़ से लटकी मिली। मृतक की पहचान अर्जुन सिंह के रूप में हुई है। गांव के चरवाहे राम सुमिरन ने इसकी जानकारी मृतक के घर वालों को दी। जिसके बाद गांव के लोग मौके पर पहुंचे और पुलिस को इसकी सूचना दी। शव को मृतक के घर से कुछ ही दूर सुनसान इलाके में देखा गया। घटना की जानकारी मिलते ही सेमरिया पुलिस मौके पर पहुंची और शव को फंदे से नीचे उतारा। सेमरिया चौकी प्रभारी विकास सिंह गहरवार ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। घटना के कारणों का पता लगाने के लिए मृतक के परिजनों और स्थानीय लोगों से पूछताछ की जाएगी। मृतक के पिता धर्मराज सिंह ने बताया कि अर्जुन सिंह पिछले कुछ समय से तनाव में थे। पारिवारिक वजह से उन्हें परेशानी थी। वो अपने बेटे के बेरोजगारी को लेकर चिंतित थे। फिलहाल पुलिस घटना के संभावित कारणों का पता लगा रही है।

विचार

भारत में एकात्म मानववाद के सिद्धांत को अपनाकर हो आर्थिक विकास

भारतीय संस्कृति के अनुसार ही भारतीय आर्थिक दर्शन में भी सृष्टि की समस्त इकाईयों, अर्थात व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं समष्टि को एक माला की कड़ी के रूप में देखा गया है। एकता की इस कड़ी को ही पंडित दीनदयाल जी उपाध्याय ने 'एकात्म मानववाद' बताया है। एकात्म मानववाद वैदिक काल से चले आ रहे सनातन प्रवाह का ही युगानुरूप प्रकटीकरण है। सनातन हिंदू दर्शन आत्मवादी है। आत्मा ही परम चेतन का अंश है। पंडित दीनदयाल जी उपाध्याय ने समाज और राष्ट्र में भी चित्त, आत्मा, मन, बुद्धि एवं शरीर आदि का समुच्चय देखा है। अतः इस एकात्म मानववादी दर्शन के उतने ही आयाम एवं विस्तार है, जितनी मनुष्य की आवश्यकताएं हैं। इन विभिन्न आवश्यकताओं का केंद्र बिंदु अर्थ को ही माना गया है। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र की परिभाषा में लिखा है कि अर्थशास्त्र का मुख्य अभिप्राय, अप्राप्ति की प्राप्ति; प्राप्ति का संरक्षण तथा संरक्षित का उपभोग है। एकात्म मानववाद में भी आर्थिक व्यवहार उक्त आधारों पर ही टिके होते हैं। इस प्रकार, अर्थशास्त्र की दिशा स्वतः ही विकासवादी हो जाती है। भारत के नागरिक पिछले लम्बे समय से पश्चिमी शिक्षा व्यवस्था में पले बढ़े हैं अतः वे भारत की पौराणिक एवं वैदिक ज्ञान परम्परा से विमुख हो गए हैं। इसी प्रकार, प्राचीन भारतीय अर्थशास्त्र एवं आर्थिक चिंतन से भी हम भारतीय इतने अधिक दूर हो गए हैं कि प्राचीन भारतीय अर्थशास्त्र को सिर्फ उक्ति एवं सिद्धांत मानने के साथ साथ अव्यवहारिक भी मानने लगे हैं। जबकि, वैदिक साहित्य में धन के 22 से अधिक प्रकारों की स्पष्ट व्याख्या की गई है, जिसमें शेयर से लेकर आय एवं मूलधन भी सम्मिलित है। प्राचीन भारत के आर्थिक चिंतन को आज यदि लागू किया जाता है तो केवल भारत ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानवता का कल्याण होगा, क्योंकि हिंदू अर्थशास्त्र एकात्म मानववाद पर आधारित है, जिसमें व्यक्ति अपने लिए नहीं, वरन समष्टि के लिए जीता है। इसे निम्नलिखित सूत्र के माध्यम से अधिक स्पष्ट किया जा सकता हैं – पश्चिम के विकासवादी दर्शन का केंद्र मुनाफा, स्वार्थ एवं लाभ है। परंतु, हिंदू आर्थिक चिंतन के आधार पर खड़े एकात्म मानववाद का आधार अथवा केंद्र परमार्थ है। इसलिए एकात्म मानववादी आर्थिक विकास में विकास केवल अर्थ के लिए नहीं वरन परमार्थ के लिए है। हिंदू आर्थिक दर्शन परम्परा में विकास की अवधारणा को समग्रता में व्यक्त किया गया है। यह विकास त्रिगुण आधारित है। इस त्रिगुण में– सत, रज एवं तम सम्मिलित है। प्राचीन भारतीय चिंतन में सत्तवादी विकास श्रेष्ठ माना गया है। इस सत्तवादी विकास के तत्व हैं ज्ञान, तपस्या, सदकर्म, प्रेम एवं समत्वभाव तथा इसकी उपस्थिति सतयुग में मानी गई है। विकास का दूसरा स्वरूप रजस को माना गया। इस रजसवादी विकास के तत्व हैं अहंबुद्धि, प्रतिष्ठा, मानबढ़ाई, लौकिक, पारलौकिक सुखा मत्सर, दम्भ एवं लोभ तथा इसकी उपस्थिति त्रेतायुग में मानी गई है। इसे मानवीय और मध्यम माना गया है।

भारत में एकात्म मानववाद के सिद्धांत को अपनाकर हो आर्थिक विकास

प्रह्लाद सबनानी

भारतीय संस्कृति के अनुसार ही भारतीय आर्थिक दर्शन में भी सृष्टि की समस्त इकाईयों, अर्थात व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं समष्टि को एक माला की कड़ी के रूप में देखा गया है। एकता की इस कड़ी को ही पंडित दीनदयाल जी उपाध्याय ने 'एकात्म मानववाद' बताया है। एकात्म मानववाद वैदिक काल से चले आ रहे सनातन प्रवाह का ही युगानुरूप प्रकटीकरण है। सनातन हिंदू दर्शन आत्मवादी है। आत्मा ही परम चेतन का अंश है। पंडित दीनदयाल जी उपाध्याय ने समाज और राष्ट्र में भी चि, आत्मा, मन, बुद्धि एवं शरीर आदि का समुच्चय देखा है। अतः इस एकात्म मानववादी दर्शन के उतने ही आयाम एवं विस्तार है, जितनी मनुष्य की आवश्यकताएं हैं। इन विभिन्न आवश्यकताओं का केंद्र बिंदु अर्थ को ही माना गया है। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र की परिभाषा में लिखा है कि अर्थशास्त्र का मुय अभिप्राय, अप्राप्ति की प्राप्ति; प्राप्ति का संरक्षण तथा संरक्षित का उपभोग है। एकात्म मानववाद में भी आर्थिक व्यवहार उक्त आधारों पर ही टिके होते हैं। इस प्रकार, अर्थशास्त्र की दिशा स्वतः ही विकासवादी हो जाती है।

भारत के नागरिक पिछले लम्बे समय से पश्चिमी शिक्षा व्यवस्था में पले बढ़े हैं अतः वे भारत की पौराणिक एवं वैदिक ज्ञान परम्परा से विमुख हो गए हैं। इसी प्रकार, प्राचीन भारतीय अर्थशास्त्र एवं आर्थिक चिंतन से भी हम भारतीय इतने अधिक दूर हो गए हैं कि प्राचीन भारतीय अर्थशास्त्र को सिर्फ उक्ति एवं सिद्धांत मानने के साथ साथ अव्यवहारिक भी मानने लगे हैं। जबकि, वैदिक साहित्य में धन के 22 से अधिक प्रकारों की स्पष्ट व्याख्या की गई है, जिसमें शेयर से लेकर आय एवं मूलधन भी सम्मिलित है। प्राचीन भारत के आर्थिक चिंतन को आज यदि लागू किया जाता है तो केवल भारत ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानवता का कल्याण होगा, क्योंकि हिंदू अर्थशास्त्र एकात्म मानववाद पर आधारित है, जिसमें व्यक्ति अपने लिए नहीं, वरन समष्टि के लिए जीता है। इसे निम्नलिखित सूत्र के माध्यम से अधिक स्पष्ट किया जा सकता हैं –

एकात्म मानववादी अर्थशास्त्र में व्यक्ति अपने एवं अपनों के स्थान पर समष्टि तथा चराचर और परमार्थ के लिए जीता है। जिसमें स्वयं के लिए मुनाफा एवं लाभ के स्थान पर दूसरों की चिंता मुख्य होती है। परंतु, इसके ठीक विपरीत पश्चिम का अर्थशास्त्र आत्मकेंद्रित व्यवहार एवं स्वार्थ पर खड़ा है।

पश्चिम के विकासवादी दर्शन का केंद्र मुनाफा, स्वार्थ एवं लाभ है। परंतु, हिंदू आर्थिक चिंतन के आधार पर खड़े एकात्म मानववाद का आधार अथवा केंद्र परमार्थ है। इसलिए एकात्म मानववादी आर्थिक विकास में विकास केवल अर्थ के लिए नहीं वरन परमार्थ के लिए है। हिंदू आर्थिक दर्शन परम्परा में विकास की अवधारणा को समग्रता में व्यक्त किया गया है। यह विकास त्रिगुण आधारित है। इस त्रिगुण में– सत, रज एवं तम सम्मिलित है। प्राचीन भारतीय चिंतन में सत्तवादी विकास श्रेष्ठ माना गया है। इस सत्तवादी विकास के तत्व हैं ज्ञान, तपस्या, सदकर्म, प्रेम एवं समत्वभाव तथा इसकी उपस्थिति सतयुग में मानी गई है। विकास का दूसरा स्वरूप रजस को माना गया। इस रजसवादी विकास के तत्व हैं अहंबुद्धि, प्रतिष्ठा, मानबढ़ाई, लौकिक, पारलौकिक सुखा मत्सर, दम्भ एवं लोभ तथा इसकी उपस्थिति त्रेतायुग में मानी गई है। इसे मानवीय और मध्यम माना गया है। इसी प्रकार, विकास का तीसरा स्वरूप तमस को माना गया है। इस तमसवादी विकास के तत्व हैं असत्य, माया, कपट, आलस्य, निंदा, हिंसा, विषाद, शोक, मोह, भय तथा इसकी उपस्थिति कलयुग में मानी गई है। इस प्रकार सत, रज एवं तम गुणों के आधार पर उक्त विकास के तीन रूपों के साथ एक मिश्रित विकास का भी मॉडल माना गया है, जिसमें रजस एवं तमस गुण मिले होते हैं और इस मॉडल की उपस्थिति द्वापर युग में मानी गई है।

इस प्रकार भारतीय चिंतन परम्परा में विकास के उक्त चार प्रारूप माने गए हैं। इन चारों प्रारूपों का उपयोग चार युगों सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग एवं कलियुग में होता पाया गया है। इसमें सबसे उत्तम सतयुगी विकास प्रारूप को माना गया है तथा सबसे अधम कलियुगी विकास प्रारूप को माना गया है। भारत में, वर्तमान खंडकाल में त्रेतायुग के रामराज्य को भी बहुत अच्छा माना गया है एवं इसके स्थापना की कल्पना की जाती रही है। पंडित दीनदयाल जी उपाध्याय ने महात्मा गांधी जी के ट्रस्टी शिप एवं हिंद स्वराज्य के विवेचन को भी अपने विमर्श में स्थान दिया है। इस प्रकार भारतीय चिंतन परम्परा का आदर्श रामराज्य है, इसमें भरत जैसे राजा एवं जनक जैसे राजा तपस्वी के रूप में राज्य करते थे। स्वयं श्रीराम धर्म की मर्यादा को अपने लिए भी लागू करते थे एवं धर्म की मर्यादा का कभी भी उल्लंघन नहीं करते थे। सदैव प्रजा एवं प्रकृति की रक्षा एवं संवर्धन करते रहते हैं। यह एक ऐसा विकास का प्रारूप है जो आज भी आदर्श है। रामराज्य की अवधारणा भी एकात्म मानववाद के आधारों पर खड़ी थी। यह शासन तथा विकास एवं व्यवस्था में सब की भागीदारी तथा सब के लिए व्यवस्था थी, जो प्रकृति आधारित विकास पर बल देती थी।

भारत में सबसे छोटी इकाई व्यक्ति पर बल दिया गया है और उसका संगठन किया गया है। भारत में व्यक्ति के स्वरूप को जिस प्रकार संगठित और एकात्म किया गया वैसा पश्चिम में नहीं हो सका है। पश्चिम में केवल भौतिक प्रगति पर ही बल दिया गया है। पूरे विश्व में आज सर्वाधिक विकसित राष्ट्र अमेरिका को माना जाता है। अमेरिका में नागरिकों की भौतिक प्रगति तो बहुत हो गई है, परंतु अमेरिका के नागरिकों में सुख, संतोष और समाधान का पूर्णतया अभाव है। अमेरिका में व्यक्ति के जीवन में परस्पर विरोध, असमाधान, असंतोष, सर्वाधिक अपराध और आत्महत्याएं बहुत बड़ी मात्रा में व्याप्त हैं। अमेरिकी नागरिकों में तीव्र रक्तचाप, हृदय रोग एवं अपराध की प्रवृत्ति बहुत अधिक मात्रा में पाई जा रही है। पूरे विश्व को प्रभावित करने की क्षमता रखने वाला अमेरिका अपने नागरिकों के लिए भौतिक समाधान से आगे बढ़कर मानसिक समाधान प्राप्त नहीं कर सका है। इस धरा पर जन्म लेने के बाद प्रत्येक व्यक्ति का अंतिम लक्ष्य आखिर है क्या? सम्भवतः सुख जो चिरंतन एवं घनीभूत हो। इतनी भौतिक प्रगति करने के बाद भी अमेरिका एवं यूरोपीय देशों के नागरिकों में समाधान व सुख का अभाव है। ईसा ने कहा था कि 'सम्पूर्ण संसार का साम्राज्य भी प्राप्त कर लिया और यदि आत्मा का सुख खो दिया तो उससे क्या लाभ?'

भारत में छोटी से छोटी इकाई व्यक्ति संगठित और एकात्म है एवं व्यक्ति को खंडो में विभक्त समझने की बुद्धिमता प्रदर्शित नहीं की गई है। परंतु, अमेरिका के एक मनोवैज्ञानिक ने वर्णन किया है कि 'सड़कों पर एक ऐसी बड़ी भीड़ हमेशा लगी रहती है जो आत्मविहीन, मानसिक दृष्टि से अस्वस्थ, एक दूसरे से अपरिचित और निःसंग स्थिति में है। उनका अपने ही साथ समन्वय नहीं तो दुनिया के साथ क्या होगा? व्यक्ति का समाज के साथ समन्वय नहीं। व्यक्ति भी संगठित और एकात्म इकाई नहीं। केवल भौतिक स्तर पर विचार करने के कारण वहां व्यक्ति को भौतिक एवं आर्थिक प्राणी माना गया है। यदि भौतिक आर्थिक उत्कर्ष मानव को मिले तो उससे सुख की प्राप्ति होगी, यह माना गया। किंतु भौतिक आर्थिक उत्कर्ष की चरम सीमा होने पर भी सुख का अभाव है और इसका कारण यही है कि वहां खंड खंड में विचार करने की प्रणाली है, जिसमें व्यक्ति को केवल भौतिक आर्थिक प्राणी मान लिया गया है और व्यक्ति के सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर संगठित एवं एकात्म रूप में विचार नहीं किया गया है।

भारत के प्राचीन ग्रंथों में यह माना गया है कि मनुष्य एक आर्थिक प्राणी भी है एवं 'आहार, निद्रा, भय, मैथुन, आर्थिक आवश्यकताओं, आदि' की तृप्ति की बात भारत में भी कही गई है। इन जरूरतों की पूर्ति होना चाहिए, इस तथ्य को भी स्वीकार किया गया है। किंतु भारत में मनुष्य को आर्थिक प्राणी से कुछ ऊपर भी माना गया है। मनुष्य आर्थिक प्राणी के साथ साथ वह एक शरीरधारी, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक प्राणी भी है। भारतीय मनुष्य के व्यक्तित्व के अनेकानेक पहलू है। अतः यदि सम्पूर्ण व्यक्तित्व के सभी पहलुओं का संगठित और एकात्म रूप से विचार नहीं हुआ तो उसको सुख समाधान की अवस्था प्राप्त नहीं हो सकती। इसलिए भारत में इस दृष्टि से संगठित एवं एकात्म स्वरूप का विचार हुआ है।

जीवन को असमय काल का ग्रास बनाते जहरीले वायु प्रदूषण से मुक्ति कब!

दीपक कुमार त्यागी

पिछले कुछ वर्षों से सर्दियों के मौसम की शुरुआत के साथ ही देश के विभिन्न शहरों में जहरीला वायु प्रदूषण अपना रंग दिखाने लगता है। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी दीपावली के बाद एकबार फिर से दिल्ली–एनसीआर के क्षेत्र में जहरीले वायु प्रदूषण के धुंध की मोटी परत छा गई है। एकबार फिर से यह पूरा क्षेत्र जहरीले वायु प्रदूषण के चलते तेजी से गैस चैंबर में बदलता जा रहा है। जिसको रोकने के लिए सर्वोच्च न्यायालय ने इस क्षेत्र में ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (त्र्क्र्क्क) की स्टेज – 4 को सख्ती से लागू करने के आदेश दिये हैं। लेकिन अफसोस की बात यह है कि सिस्टम में व्याप्त भ्रष्टाचार के चलते धरातल पर हॉट स्पॉट की निगरानी अब भी नहीं हो रही है। ग्रेप का चौथा चरण लागू होने के बाद भी वायु प्रदूषण पर लगाम लगाने के लिए धरातल पर किसी दूरगामी ठोस कार्ययोजना का क्रियान्वयन होता हुआ नज़र नहीं आ रहा है। जहरीले वायु प्रदूषण के कारणों को जानने के बाद भी सिस्टम उनका स्थाई निदान नहीं कर रहा है। अब भी लोग बेखौफ होकर के ग्रेप – 4 की पाबंदियों को ठेंगा दिखाकर प्रतिबंधित काम निरंतर कर रहे हैं, बहुत सारे लोगों ने अभी भी निर्माण कार्य व तोड़फोड़ का कार्य जारी करवा रखा है। लोग अब भी निर्माण कार्य के लिए खुले में ही निर्माण सामग्री डाल रहे हैं। सरकारी तंत्र की लापरवाही से टूटी हुई सड़कों पर धूल का गुब्बार उठाते हुए वाहन चलने के लिए मजबूर हैं। कुछ फैक्ट्रियों की चिमनी से अब भी बेख़ौफ़ होकर के धूंआ निकल रहा है। अब भी लोग बेखौफ होकर के डीजल जनरेटर चला रहे हैं। ढाबे, रेस्टोरेंट, फार्महाउस व बैंकेट हॉल आदि में खुलेआम तंदूर

चला रहे हैं। कुछ लोग कूड़े का उचित निस्तारण ना करके सड़क किनारे खुलेआम कूड़ा जला रहे हैं। सड़कों पर वाहन अपनी मियाद समाप्त होने का बाद भी चल रहे हैं। कुछ प्रतिबंधित वाहन बैखौफ होकर चल रहे हैं। जिस लापरवाही पूर्ण स्थिति के चलते हुए एकबार फिर से वायु प्रदूषण से दिल्ली–एनसीआर में स्थिति बेहद गंभीर बनती जा रही है। हालांकि इस पूरे क्षेत्र में जल, थल व नभ तरह–तरह के प्रदूषण से जूझ रहे हैं। लोगों के पास पीने के लिए ना तो स्वच्छ पेयजल है, ना ही सांस लेने के लिए स्वच्छ वायु है, ना ही लोगों के पास खाने के लिए स्वच्छ गुणवत्ता पूर्ण शुद्ध आहार उपलब्ध है, वहीं इस क्षेत्र में रही–सही कसर समय–समय पर कानफोड़ू ध्वनि प्रदूषण पूरी कर देता है।

लेकिन चिंता जनक बात यह है कि पिछले वर्ष भी जहरीले वायु प्रदूषण के चलते नवंबर माह के शुरुआती दिनों में ही यह पूरा क्षेत्र भयावह रूप से जहरीले गैसों के चैंबर में तब्दील हो गया था, फिर भी स्थिति जस की तस बनी हुई है। इस क्षेत्र में जहरीले वायु के प्रदूषण के नियंत्रण के नाम पर दिल्ली, पंजाब, हरियाणा व उत्तर प्रदेश आदि राज्य एक दूसरे को जिम्मेदार ठहरा कर के अपने कर्तव्यों की कागज़ी खानापूर्ति हर वर्ष बखूबी से कर लेते हैं। पिछले वर्ष भी वायु प्रदूषण के इस मसले पर सर्वोच्च न्यायालय ने संज्ञान लिया और न्यायालय की सख्त फटकार के बाद राज्य सरकारों का सिस्टम फाइलों से निकल करके वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए धरातल पर कुछ सक्रिय हुआ था, लेकिन इस वर्ष लोगों को उम्मीद थी कि पिछले वर्ष की न्यायालय की जबरदस्त फटकार का धरातल पर कुछ तो असर हुआ होगा, इस क्षेत्र के लोगों के अनमोल जीवन को वायु प्रदूषण से बचाने के लिए कुछ तो ठोस कार्य धरातल पर बीते एक वर्ष में संपन्न हुए होंगे, लेकिन अफसोस की बात यह है कि इस वर्ष भी जहरीले वायु प्रदूषण की स्थिति वहीं बनी हुई है, जहरीले वायु प्रदूषण के चलते इस क्षेत्र के लोगों की सांसों पर भयावह आपातकाल लगा हुआ है। अस्पतालों में वायु प्रदूषण के दुष्प्रभाव से जनित रोगों से पीड़ित रोगियों की बाढ़ आई हुई है, लोग असमय काल का ग्रास बन रहे हैं और देश व राज्यों के कर्ताधर्ता इसके लिए जिम्मेदार सिस्टम को समय रहते सख्ती से दिशा–निर्देश देने की जगह उसको भगवान भरोसे छोड़कर के चुनावों में विजय हासिल करने के प्रयासों में मस्त हैं।

इस वर्ष भी पूरे क्षेत्र में दिपावली पर सर्वोच्च न्यायालय के पटाखे बेचने व छोड़ने पर रोक होने के आदेश के बावजूद भी सिस्टम के मूकदर्शक बने रहने के चलते ही जमकर के पटाखे बेचने व छोड़ने का काम हुआ। लोगों की नादानी ने अपने आप ही जहरीले वायु प्रदूषण को न्योता देने का कार्य बखूबी किया था। जिसके चलते दीपावली के बाद एकबार फिर से दिल्ली–एनसीआर के क्षेत्र में वायु प्रदूषण का स्तर बहुत तेजी से खराब हो गया है। वायु प्रदूषण को दर्शाने वाला एक्यूआई का इंडेक्स 500–600 तक पहुंचकर के दिल्ली–एनसीआर में लोगों के जीवन को तरह–तरह के रोगों से ग्रस्त करके लीलने का कार्य कर रहा है। अगर समय रहते इस वर्ष भी सर्वोच्च न्यायालय सख्ती ना दिखाएं तो पिछले वर्ष की तरह ही इस वर्ष भी एक्यूआई अपने ही पुराने रिकॉर्ड को ध्वस्त करने में व्यस्त नज़र आता। हालांकि इस वर्ष तो इस क्षेत्र की जनता पराली जलाने के मौसम से पहले व दीपावली के पहले से ही वायु प्रदूषण से बार–बार परेशान हो रही थी, फिर भी हमारे सिस्टम ने सर्दियों में गंभीर वायु प्रदूषण ना हो उसके लिए कोई ठोस तैयारी धरातल पर नहीं की है, जिसका परिणाम अब एकबार फिर से दिल्ली–एनसीआर क्षेत्र गैस चैंबर बनने के रूप में सबके सामने है।

आज विचारणीय तथ्य यह है कि पिछले कुछ वर्षों से बढ़ते हुए वायु प्रदूषण ने दिल्ली–एनसीआर के क्षेत्र को बार–बार गैस चैंबर बनाकर के रख दिया है, जो स्थिति लोगों व जीव–जंतुओं आदि सभी के जीवन के लिए बेहद घातक है। अब तो वायु प्रदूषण लोगों का अनमोल जीवन लीलने लग गया है। इस क्षेत्र में वायु प्रदूषण की इस भयावह स्थिति पर चिकित्सक कहते हैं कि – दिल्ली–एनसीआर में वायु प्रदूषण के चलते अब बेहद गंभीर प्रकृति की स्वास्थ्य समस्याओं का जबरदस्त जोखिम बना हुआ है। वायु प्रदूषण के चलते अब बच्चे, नौजवान, बुजुर्गों में तरह–तरह की स्वास्थ्य समस्याएं स्पष्ट नज़र आने लग गयी हैं। लोगों में सिरदर्द, चिंता, चिड़चिड़ापन, सांस संबंधी समस्याएं तेजी से काफी बढ़ गई हैं।

सेंट्रल जेल में बंदी की बिगड़ी तबीयत, मौत

पुलिस बोली- ब्रेन स्ट्रोक से गई जान, बस्तीवालों ने घेरा था थाना, बोले-युवक को पीटा गया

मीडिया ऑडीटर, दुर्ग एजेंसी। छत्तीसगढ़ के दुर्ग सेंट्रल जेल में लूट के आरोपी की तबीयत बिगड़ गई। हालत गंभीर होने पर रायपुर के मेकाहारा अस्पताल गया, जहां उसने दम तोड़ दिया। इसके पहले आरोपी के परिजनों और करीब 100 ग्रामीणों ने सुपेला थाने में जमकर बवाल किया था। पुलिस को लाठीचार्ज करना पड़ा। परिजनों ने पुलिस पर मारपीट के आरोप लगाए हैं।

दरअसल, लूट के मामले में फरीद नगर स्थित बस्ती से पिंटू नेताम को गिरफ्तार किया गया था। बुधवार को दुर्ग सेंट्रल जेल में आरोपी की तबीयत बिगड़ने पर उसे रायपुर मेकाहारा में भर्ती कराया गया था। उसकी हालत नाजुक बनी हुई थी। गुरुवार को उसने दम तोड़ा है। ब्रेन स्ट्रोक से जान गई है।

बंदी की मौत के बाद क्या बोली पुलिस: बंदी की मौत के बाद भिलाई नगर सीएसपी सत्य प्रकाश तिवारी ने बताया कि आरोपी पिंटू नेताम 18 अक्टूबर से केंद्रीय जेल दुर्ग में बंद था। उसे पहले से मिर्गी के झटके आने की शिकायत भी थी। गिरफ्तारी के 28 दिन बाद 15 नवंबर को अचानक उसका ब्लड प्रेशर लो हो गया। जिला अस्पताल दुर्ग में एडमिट कराया गया। तबीयत में सुधार के बाद 17 नवंबर को केंद्रीय जेल दुर्ग वापस भेज दिया गया।

ब्रेन स्ट्रोक के कारण उसका ब्लड प्रेशर लो हुआ: सीएसपी ने बताया कि 18 नवंबर को उसका ब्लड प्रेशर फिर लो हो गया। जेल प्रशासन ने मेकहारा अस्पताल रायपुर में एडमिट कराया। जहां डॉक्टर्स ने ब्रेन स्ट्रोक के कारण उसका ब्लड प्रेशर लो होना और ब्रेन में ऑक्सीजन सप्लाई कम होने के कारण आईसीयू में भर्ती किया। जहां इलाज के दौरान 21नवंबर को उसकी मौत हो गई।

बंदी की मौत की मजिस्ट्रियल जांच शुरू: सीएसपी ने बताया कि जेल अभिरक्षा के दौरान उससे मारपीट या उत्पीड़न जैसी कोई घटना नहीं हुई है। कानून व्यवस्था की स्थिति खराब करने का प्रयास किया जा रहा है। पुलिस पर बेबुनियाद आरोप लगाए जा रहे हैं। विचाराधीन बंदी की मौत की मजिस्ट्रियल जांच शुरू की जा रही है।

अब विस्तार से समझिए बुधवार रात थाने में क्या-क्या हुआ: दरअसल, बुधवार को लूट के आरोपी पिंटू नेताम के परिजन और बस्ती के लोगों ने थाने का घेराव कर दिया। तीन थानों के टीआई और बड़ी संख्या में पुलिस बल के मौजूद रहने के बाद भी डेरा बस्ती के लोग पीछे हटने का नाम नहीं ले रहे थे। इस दौरान समझाने के बाद भी जब लोग नहीं माने तो पुलिस को लाठीचार्ज करना पड़ा।

नशे की हालत में थे परिजन और बस्तीवाले: पुलिस के मुताबिक वह लोगों को समझाने की कोशिश करती रही, लेकिन वह कुछ भी सुनने को तैयार ही नहीं थे। पुलिस के मुताबिक आरोपी की तबीयत बिगड़ने के बारे में सेंट्रल जेल प्रबंधन जानकारी देगा, लेकिन परिजन पुलिस पर ही मारपीट का आरोप लगाकर विरोध करते रहे।

धक्कामुक्की और पुलिस से छीनी लाठी: महिलाओं ने चौकी प्रभारी वंदिता से धक्का-मुक्की कर सीएसपी सत्य प्रकाश तिवारी से लाठी छीनने लगीं। मामला बेकाबू होने पर पुलिस ने बल प्रयोग किया तो लोग और आक्रोशित हो गए। इससे भड़क कर पुलिस पर मारपीट के आरोप लगाए जा रहे हैं।

9 शिक्षकों से 81 लाख की ठगी

हर टीचर्स के नाम पर 10 से 21 लाख का लिया लोन, ठग बोले- कंपनी चुकाएगी किस्त

मीडिया ऑडीटर, रायगढ़ एजेंसी। छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले में 9 शिक्षकों से 81 लाख से ज्यादा की ठगी की गई है। बताया जा रहा है कि ड्रीम अल्फा ओमेगा मल्टीट्रेड सर्विसेस प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के माध्यम से लोन निकाला गया है। लैलूंगा पुलिस ने अपराध दर्ज कर लिया है। मिली जानकारी के मुताबिक आरोपियों ने 50 प्रतिशत फायदा दिखाकर झांसे में लिया। ठगों ने बताया कि 50 प्रतिशत लोनधारकों को मिलेगा, 40 परसेंट कंपनी रखेगी और 10 परसेंट एजेंट को मिलेगा। लोन का पूरा अमाउंट कंपनी यानी (ड्रीम अल्फा ओमेगा मल्टीट्रेड सर्विसेस प्राइवेट लिमिटेड) चुकाएगी।

सुनील तिग्गा ने जाल में फंसाया: दरअसल, 2021 में सत्यनारायण का साथी सिरिल केरकेट्टा के साथ नवापारा अंबिकापुर का रहने वाला सुनील तिग्गा उसके पास पहुंचा। सत्यनारायण सिदार लैलूंगा के स्कूल में शिक्षक के पद पर पदस्थ है। इस दौरान सुनील तिग्गा ने सत्यनारायण सिदार को ड्रीम अल्फा कंपनी के डायरेक्टर इलियाजर कुमार बारे में बताया और स्कीम को लेकर झांसा दिया। सत्यनारायण सिदार 50 परसेंट की लालच में आ गया। उसने तीन अलग-अलग बैंकों से 14 लाख 80 हजार रुपए का लोन लिया। तय परसेंट के हिसाब से पैसों का बंटवारा हो गया। इसके बाद सत्यनारायण सिदार ने इस स्कीम के बारे में अपने साथी टीचर्स को भी बताया।

2022 में किस्त जमा करने के बाद बंद कर दिया: इसके बाद मधुबाला एक्का, युदिष्ठिर गुप्ता, रेशमा लकड़ा, ग्लोरिया एक्का, सविता जांगड़े, सिरिल केरकेट्टा, महेत्तर प्रसाद चौहान ने भी लोन निकलवाया। सभी ने कंपनी को परसेंट के हिसाब से पैसे ले लिए। सभी से करीब 81 लाख लोन निकलवाया, लेकिन कंपनी ने अक्टूबर 2022 में किस्त जमा करने के बाद बंद कर दिया।

बढ़ते ब्याज से परेशान शिक्षक पहुंचे थाना: बढ़ते ब्याज से परेशान होकर सभी शिक्षक कपंनी के डायरेक्टर अंबिकापुर निवासी इलियाजर से संपर्क किया, लेकिन उससे संपर्क नहीं हो सका। इससे सभी समझ गए गए कि उनसे धोखाधड़ी की गई है। सत्यनारायण समेत सभी शिक्षकों ने लैलूंगा थाने पहुंचकर आरोपियों के खिलाफ अपराध दर्ज कराया।

7 लोगों ने मिलकर की धोखाधड़ी: बताया जा रहा है कि धोखाधड़ी में 7 लोग शामिल थे। इसमें कंपनी डायरेक्टर इलियाजर कुमार, अनीता बेक, बुधेश्वर कुजूर, सुनील कुमार तिग्गा, श्याम सुन्दर जांगड़े, संजय राम, चंदन टोप्पो ने एजेंट और कर्मचारी बनकर ठगी की है।

5-6 किस्त ही पटाया गया: सभी शिक्षकों के पास आरोपी एजेंट और कपंनी कर्मचारी बनकर पहुंचते थे। इसके बाद लोन निकलवाकर चेक और कैश के माध्यम से 50 प्रतिशत रुपए ले लेते थे। 4 किस्तों में लोन की राशि चुका देने की बात कहते थे। तीन साल में लोन बंद कराने का झांसा दिए थे। सिर्फ 5 से 6 किस्त ही जमा किए।

किसके नाम पर कितना लोन: इमिल साय तिर्की 10 लाख 95 हजार 260 रुपए, मधुबाला एक्का 11 लाख 86 हजार 132 रुपए, युधिष्ठिर गुप्ता 5 लाख 74 हजार 946 रुपए, रेशम लकड़ा 7 लाख 20 हजार 102 रुपए, ग्लोरिया एक्का 5 लाख 98 हजार 445 रुपए का लोन है। इसके अलावा सविता जांगड़े पर 4 लाख 66 हजार 652 रुपए, सिरिल केरकेटटा 10 लाख 60 हजार 600 रुपए, मेहत्तर प्रसाद चौहान 14 लाख 45 हजार 600 रुपए, सत्यनारायण सिदार 9 लाख 87 हजार 200 रुपए को लोन बकाया है। कुल 81 लाख 34 हजार 937 रुपए की ठगी की गई है।

आरोपियों की पतासाजी की जा रही: लैलूंगा थाना प्रभारी राजेश कुमार जांगड़े ने बताया कि धोखाधड़ी का मामला सामने आया है, जिसमें आरोपियों के खिलाफ अपराध दर्ज कर लिया गया है। मामले में आरोपियों की पतासाजी की जा रही है। जल्द ही उन्हें पकड़ लिया जाएगा।

टूटा पाइपलाइन, बाजार में भरा पानी

एक सप्ताह के भीतर दूसरी घटना, अमृत मिशन योजना में बड़ी गड़बड़ी उजागर, दुकानों में घुसा पानी

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। बिलासपुर में अमृत मिशन योजना की टेस्टिंग के बाद भी जगह-जगह लीकेज और पाइप टूटने का सिलसिला नहीं थम रहा है। शुक्रवार को शहर के व्यस्ततम इलाके शनिचरी बाजार में पाइप लाइन टूट गया, जिसके चलते बाजार लबालब हो गया। इसके चलते हजारों लीटर पानी बह गया। एक सप्ताह के भीतर यहां दूसरी बार पाइप लाइन टूट गया, जिसके चलते कई दुकानों में पानी घुस गया और व्यापारियों के साथ ही लोग परेशान होते रहे। दरअसल, नगर निगम ने शहर में पाइप लाइन से पानी सप्लाई के लिए टेस्टिंग शुरू करने का दावा किया है। इसके तहत अमृत मिशन योजना के तहत बिछाई गई पाइप लाइन से पानी की सप्लाई की जा रही है। लेकिन, करीब साल भर का वक्त बीत जाने के बाद भी अब तक नगर निगम की टीम पूरी तरह से टेस्टिंग नहीं कर सका है। जिसके चलते पाइप लाइन के लीकेज का पता नहीं चलता। इस दौरान पाइप लाइन से लगातार पानी के रिसाव की वजह से सड़कें धंसने पर पाइप लाइन टूट रही हैं, जिसके चलते हजारों लीटर पानी बर्बाद हो रहा है।

शनिचरी बाजार में दूसरी बार हुई घटना: शनिचरी बाजार स्थित बिलासा चौक के पास एक सप्ताह पहले ही पाइप लाइन में लिकेज हुआ था, जिसके चलते पाइप का पानी सड़कों पर आ गया। इस दौरान सड़क के ऊपर नाले की तरह पानी बहने लगा। वहीं, पानी आसपास की कई दुकानों में घुस गया। नगर निगम ने पाइप लाइन के लीकेज को सुधार कर ठीक करने का दावा किया था। लेकिन, महज एक सप्ताह में फिर से दूसरी बार पाइप लाइन फट गया और फिर से पाइप का पानी सड़कों पर लबालब हो गया, जिसके बाद पानी कई दुकानों में घुस गया।

एक घंटे तक बहता रहा पानी, गायब रहा निगम का अमला: नगर निगम ने अरपा पार सरकंडा से मेन पाइप लाइन को अरपा नदी पर बने पुराने पुल से होकर निकाला है। जिसके बाद शहर के अलग-अलग मोहल्लों में पाइप बिछाई गई है। शनिचरी बाजार के पास मेन पाइप लाइन में लीकेज की वजह से फौव्वारे की तरह पानी बहता रहा। धीरे-धीरे कर पानी का बहाव तेज हो गया और फिर आसपास का इलाका नाले में तब्दील हो गया। इस दौरान करीब एक घंटे तक हजारों लीटर पानी बह गया। इसके बाद भी निगम का अमला गायब रहा।

अमृत मिशन योजना में लापरवाही, सड़कें हो रही खराब: बताया जा रहा है कि अमृत मिशन योजना के तहत बिछाई गई पाइप लाइन को सही तरीके से नहीं जोड़ा गया है। कही, वाल्व नहीं लगा है, तो कहीं पाइप जोड़ना ही भूल गए हैं। ऐसे में पाइप लाइन में लीकेज हो रहा है, जो अंदर ही अंदर बहकर सड़क को खोखला कर रहा है। पानी के प्रेशर से कई जगह से सड़कें धंस गई है।

पांच साल पहले शुरू हुआ था काम, एक साल से चल रही टेस्टिंग: छत्तीसगढ़ में सबसे पहले शुरू हुई अमृत मिशन योजना सबसे पीछे चल रही है। ठेका कंपनी इंडियन ह्यूम पाइप को सरकार ने खूंटाघाट से शहरवासियों को पानी सप्लाई के लिए 301 करोड़ का ठेका दिया था। अक्टूबर 2017 से कार्य शुरू कर सप्लाई 3 अप्रैल 2020 से शुरू की जानी थी, लेकिन यह 44 महीना लेट हो चुकी है। अब फिर से कंपनी को 30 दिसंबर का अल्टीमेटम मिला है। पांच साल पहले शुरू हुई इस योजना को पूरा करने के लिए अफसरों से टारगेट मिलने के बाद मनमाने तरीके से काम किया जा रहा है। इसके साथ ही अमृत मिशन योजना का काम शहर में रुक रुक पिछले पांच साल से चल रहा है, जिसके कारण ठेका कर्मियों को भी यह पता नहीं है कि पाइप लाइन कहां बिछाई गई और उसमें बाल्व लगा है या नहीं। इसके चलते टेस्टिंग करने का दावा किया गया था।

अनुविभाग में अवैध धान खपाने की कोशिश नाकाम

3654 बोरी धान जब्त

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। भरतपुर अनुविभाग में धान खरीदी वर्ष 2024-25 के तहत अन्य राज्यों के धान को अनुविभाग के विभिन्न उपार्जन केंद्रों में खपाने की कोशिश की जा रही थी। धान खरीदी 2024-25 की नीति के अनुसार और अवैध धान के खिलाफ राजस्व एवं खाद्य विभाग द्वारा संयुक्त कार्यवाही की गई। इस कार्रवाई के दौरान अनुविभाग से सटे मध्यप्रदेश राज्य से रात में विभिन्न वाहनों में लाए गए कुल 295 बोरी धान को वाहन सहित जब्त कर कुवांरपुर थाना पुलिस चौकी और जनकपुर थाने में सुपुर्द किया गया। कार्रवाई के इसी क्रम में अन्य राज्य से लाए गए धान को विभिन्न गोदामों और घरों में छुपाकर रखा गया था। संयुक्त दल ने कुल 3359 बोरियों (35-40 किलो प्रति बोरी) को जब्त कर जहां से धान जब्त किया गया, वहीं सुपुर्दगी में दे दिया। इस प्रकार संयुक्त कार्यवाही के अंतर्गत कुल 3654 बोरी धान को अवैध रूप से उपार्जन केंद्रों में खपाने से रोका गया।

कच्चे मकान के बरामदे में पाठशाला

4 साल बाद भी नहीं बना स्कूल भवन, सुविधाओं के अभाव के बीच पढ़ रहे 25 स्टूडेंट्स

मीडिया ऑडीटर, बलरामपुर एजेंसी। बलरामपुर जिले के वाड्रफनगर विकासखंड के पिपराडीह गांव में प्राथमिक स्कूल का संचालन एक कच्चे मकान के बरामदे में किया जा रहा है। इसी एक बरामदे में गांव के करीब 25 बच्चों का भविष्य गढ़ा जा रहा है। जानकारी के मुताबिक यह इलाका विशेष पिछड़ी जनजाति का है, जहां राष्ट्रपति के दत्तक पुत्र माने जाने वाले लोग निवास करते हैं। चार साल पहले इस गांव में स्कूल नहीं था। मीडिया में खबरें आने के बाद तत्कालीन कलेक्टर ने वैकल्पिक तौर पर प्राथमिक शाला और मिनी आंगनबाड़ी केंद्र शुरू कराया। लेकिन चार साल बीतने के बावजूद गांव में स्कूल भवन का निर्माण नहीं हो सका। बारिश और गर्मी जैसे मौसमों में बच्चों को कच्चे बरामदे में ही पढ़ाई करनी पड़ती है।

गांव में करीब 70-80 घरों की आबादी है। शिक्षा विभाग के तमाम दावे इस गांव में खोखले साबित हो रहे हैं। बच्चे और शिक्षक दोनों लंबे समय से पक्के स्कूल भवन की मांग कर रहे हैं। ग्रामीणों का कहना है कि सरकारी योजनाओं के बावजूद शिक्षा जैसी बुनियादी जरूरतों की अनदेखी हो रही है।

क्लास रूम में सो रहीं टीचर, बच्चों को पढ़ाने के बजाए वीडियो काल में व्यस्त थीं हेडमास्टर, टीचर बोलीं- तबीयत ठीक नहीं

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर के सरकारी स्कूल में एक टीचर क्लास रूम में बच्चों को पढ़ाना छोड़कर लात तान कर सो रहीं थीं। टीचर के स्कूल में सोने का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल रहा है। इसमें वो वीडियो बनाने वाले युवक को बोल रही हैं कि उन्हें अच्छा नहीं लग रहा है। तबीयत ठीक नहीं है, हाथ-पैर में दर्द हो रहा है। वीडियो मस्तूरी ब्लाक के ग्राम बरेली स्थित प्राइमरी स्कूल का है। सरकारी अमला स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता दुरुस्त करने का दावा कर रहा है। कलेक्टर अवनीश शरण लगातार स्कूलों का दौरा कर शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने पर जोर दे रहे हैं। उनकी सख्ती ऐसी कि मनमानी और अनुशासनहीनता करने वाले शिक्षकों पर एक्शन भी लिया जा रहा है। इसके बावजूद शिक्षकों की मनमर्जी और लापरवाही कम नहीं हो रही है। जिसके कारण स्कूली बच्चों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है।

क्लास रूम में लात तान कर सो रहीं टीचर: मस्तूरी विकासखंड के ग्राम बरेली के प्राइमरी स्कूल में शिक्षकों की मनमानी का मामला सामने आया है। यहां पदस्थ टीचर रामेश्वरी कैवर्त्य का एक वीडियो सामने आया है, जिसमें वो क्लास रूम में बच्चों को पढ़ाने के बजाए लात तान कर सो रहीं हैं। एक युवक जब टीचर का वीडियो बनाने पहुंचा, तब उनकी नींद खुली।

टीचर बोली- मुझे अच्छा नहीं लग रहा, तबीयत खराब है: इस दौरान वो वीडियो में कह रहीं हैं कि मुझे अच्छा नहीं लग रहा है। सुबह से तबीयत ठीक नहीं है, पता नहीं मौसम की वजह से हाथ-पैर में दर्द हो रहा है। टीचर युवक को वीडियो बनाने से भी रोकती दिख रही हैं।

वीडियो कॉल में व्यस्त थीं हेडमास्टर: वहीं, स्कूल में पदस्थ हेडमास्टर लक्ष्मी माल्या अपने कार्यालय में बैठकर वीडियो कॉल पर व्यस्त थीं।

जिला प्रशासन द्वारा रोजगार मेला/प्लेसमेंट कैम्प का आयोजन

निजी क्षेत्र में 812 पदों पर भर्ती

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। जिला प्रशासन, मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर (छत्तीसगढ़) द्वारा 24 नवंबर 2024 रविवार को प्रातः 11:00 बजे से शाम 04:00 बजे तक स्वामी आत्मानंद इंग्लिश मीडियम स्कूल, मनेन्द्रगढ़ में रोजगार मेला/प्लेसमेंट कैम्प का आयोजन किया जा रहा है। इस आयोजन में निजी क्षेत्र के विभिन्न प्रतिष्ठानों से कुल 812 रिक्तियां प्राप्त हुई हैं।

इस रोजगार मेले में अलग-अलग पदों पर भर्ती की जाएगी। इनमें सिक्योरिटी गार्ड, ओटी तकनीशियन, बीएससी नर्सिंग और जीएनएम, लैब तकनीशियन, एजेंट, डीएम, ऑटोमोबाइल सेल्स, सर्विस सुपरवाइजर,टू व्हीलर/इवी सेल्स सर्विस/सेल्स, हेल्पर, इलेट्रिशन, फिटर, ऑफिस असिस्टेंट, वेल्डर, पेंटर, लेबर, जनरल असिस्टेंट, वर्किंग पार्टनर, मार्केटिंग, एजेंट, सिक्योरिटी गार्ड, सर्वेयर और कंप्यूटर संचालक, अप्रेंटिस इडीओ-एल, इडीओ, कलेक्शन मैनेजर जैसे पद शामिल हैं।

नियोजक एवं पदों का विवरण: मेसर्स बाम्बे इंटीग्रेटेड सिक्योरिटी रायपुर द्वारा सिक्योरिटी गार्ड के लिए 10वीं पास योग्यता मांगी गई है और वेतन 14,000 से 19,000 रुपये निर्धारित है।

जिसमें मेसर्स मूंद्रा हॉस्पिटल मंगल चौक, बिलासपुर बीएससी नर्सिंग और जीएनएम के लिए न्यूनतम दो वर्ष के अनुभव के साथ 10,000 रुपये वेतन पर नियुक्ति करेगा। मेसर्स एसएच प्रोजेक्ट्स पिपरिया, मनेन्द्रगढ़ लैब तकनीशियन के लिए स्नातक (रसायन विषय से) योग्यता के साथ 10,000 रुपये वेतन पर नियुक्ति करेगा। एजेंट पद पर 10वीं पास अभ्यर्थी को कमीशन बेस पर काम का अवसर मिलेगा। मेसर्स एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस, मनेन्द्रगढ़ स्नातक पास उम्मीदवारों को डीएम पद के लिए 2.5 लाख रुपये वार्षिक वेतन पर नियुक्त करेगा। वहीं, मेसर्स कोरिया ऑटो सेल्स पार्ट सेंटर, बैकुंठपुर ऑटोमोबाइल सेल्स और सर्विस सुपरवाइजर के लिए 12वीं और स्नातक पास उम्मीदवारों को अवसर देगा। हेल्पर पद के लिए अनपढ़ से 12वीं पास उम्मीदवारों को 15,500 रुपये वेतन मिलेगा। मेसर्स मोहिनी हेल्थ एंड हाइजिन लिमिटेड, पीथमपुर (मध्यप्रदेश) बिजली मिस्त्री और फिटर पदों पर आईटीआई पास उम्मीदवारों को 16,500 रुपये वेतन पर भर्ती करेगा। ऑफिस असिस्टेंट पद के लिए 12वीं पास/स्नातक उम्मीदवार को 17,500 रुपये वेतन दिया जाएगा। मेसर्स अमर एग्रो इंडस्ट्रीज, लालपुर मनेन्द्रगढ़ वेल्डर के लिए आईटीआई पास उम्मीदवार को 11,000 रुपये, पेंटर के लिए 5वीं पास को 9,000 रुपये, और लेबर के लिए 7,000 रुपये वेतन पर भर्ती करेगा। मेसर्स बिलासा भूमि बिल्डर्स प्राइवेट लिमिटेड, उसलापुर बिलासपुर जनरल असिस्टेंट के लिए 12वीं पास और कंप्यूटर पास उम्मीदवार को 12,000 रुपये वेतन पर नियुक्त करेगा। वर्किंग पार्टनर पद के लिए स्नातक/स्नातकोत्तर उम्मीदवार को 40: लाभ दिया जाएगा। मेसर्स अलर्ट प्लेसमेंट सर्विस, रायपुर सिक्योरिटी गार्ड, सर्वेयर और एजेंट पदों के लिए 8वीं पास से स्नातक तक के उम्मीदवारों को अवसर प्रदान करेगा। वेतन 11,000 से 13,000 रुपये तक रहेगा। मेसर्स सत्या माइक्रो केपिटल लिमिटेड वार्ड न.14 नियर बैंक ऑफ इंडिया बैकुण्ठपुर जिला कोरिया छत्तीसगढ़ 12वीं पास एवं ड्राइविंग लाइसेंस अनिवार्य, वेतन 12500 से 30000 रूपये तक रहेगा।

आवेदन के लिए महत्वपूर्ण निर्देश: इस रोजगार मेले में 8वीं पास से लेकर स्नातकोत्तर तक के योग्य अभ्यर्थी शामिल हो सकते हैं। अलग-अलग पदों के लिए न्यूनतम और अधिकतम योग्यता निर्धारित है। इच्छुक उम्मीदवारों को अपने शैक्षणिक दस्तावेजों, बायोडाटा, और पहचान पत्र के साथ निर्धारित स्थल पर पहुंचना होगा।

बाल विवाह मुक्त छत्तीसगढ़ एवं हमर स्वस्थ लईका समुदाय आधारित पोषण कार्यक्रम का हुआ आयोजन

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी निप्र। महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा जिले के कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में बाल विवाह मुक्त छत्तीसगढ़ एवं हमर स्वस्थ लईका समुदाय आधारित पोषण कार्यक्रम (सी मैम) के अंतर्गत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें कलेक्टर डी. राहुल वेंकट और महिला एवं बाल विकास अधिकारी शुभम बंसल उपस्थित थे। इस कार्यशाला में विभिन्न आंगनबाड़ी केंद्रों और योजनाओं की गतिविधियों और आगामी योजनाओं पर विस्तार से चर्चा की गई। वहीं कलेक्टर ने सभी सुपरवाइजर और परियोजना अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे जिले के सभी आंगनबाड़ी केंद्रों में नियमित रूप से बच्चों का वजन कराने के साथ ही बच्चों के स्वास्थ्य की जांच करने के लिए भी कहा। आगे उन्होंने पोषण ट्रेकर के माध्यम से बच्चों के पोषण स्तर की सही निगरानी रखने की बात कही। जिससे बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार किया जा सके साथ ही जर्जर आंगनबाड़ी केन्द्रों की लिस्ट भेजने के निर्देश दिये। वही महिला बाल विकास अधिकारी शुभम बंसल ने जानकारी दी कि जिले में इस बार मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना के अंतर्गत होने वाले विवाह का फॉर्म 01 दिसम्बर से 31 दिसंबर तक भरे जाने है इसके साथ ही आगे उन्होंने कहा है कि मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना से इस बार लगभग 120 जोड़ो को का विवाह जनवरी या फरवरी में होना है, वही सभी आवेदनों को वेरिफाई करने के लिए सुपरवाइजर और परियोजना अधिकारियों को निर्देश दिए हैं। महिला एवं बाल विकास अधिकारी ने जिले में पालना केंद्र (क्रेच) को सही से खोलने के लिए निर्देश दिए, जिससे कामकाजी माताओं के बच्चों की देखभाल में अच्छे से सहूलियत मिल सके। इस बैठक में शुभम बंसल ने जिन आंगनबाड़ी केंद्रों की जानकारी को इंफ्रा पोर्टल पर अपडेट नहीं हुआ है उसको अपडेट करने की निर्देश दिए। उन्होंने आगे कहा कि प्रत्येक केंद्र की भौतिक और तकनीकी जानकारी समय पर पोर्टल पर उपलब्ध कराई जाए, ताकि विभाग को हर केंद्र की वास्तविक स्थिति का सही अंदाजा हो सके और जरूरत के मुताबिक संसाधन उपलब्ध कराए जा सकें। आगे शुभम बंसल ने बताया कि जिले के आंगनबाड़ी केंद्रों में 5 नए बोरवेल खनन होना था वह नहीं हुआ है, उनकी सूची तैयार करने कहा है। उन्होंने संबंधित बाल विकास परियोजना अधिकारी, सेक्टर सुपरवाइजर और आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को इस दिशा में सक्रिय भूमिका निभाने का निर्देश दिया। इस बैठक में शुभम बंसल ने कहा कि इस बार बाल विवाह रोकने हेतु सभी सुपरवाइजर और ग्राम पंचायत के सचिवों को बाल विकास परीक्षक अधिकारी बनाया जायेगा, वही पुलिस विभाग और तहसीलदार से सहयोग मांगने के लिए कहा, इसके साथ ही सुकन्या समृद्धि योजना के लिए स्कूलों से सहयोग मांगने के लिए कहा, साथ ही (सी सैम) डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से पोषण अभियान और आंगनबाड़ी केंद्रों की निगरानी करने और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को मोबाइल आधारित ऐप के माध्यम से पोषण, स्वास्थ्य और शिक्षा से संबंधित डेटा एकत्र करने, ट्रैक करने और योजनाओं को प्रभावी रूप से लागू करने के निर्देश दिए है। साथ ही अति गंभीर कुपोषित बच्चों को पोषण ट्रेकर में अपडेड करने के लिए कहा उन्होंने आगे बताया कि एनआरसी के माध्यम से गंभीर कुपोषण से ग्रस्त बच्चों को चिकित्सा सहायता, उचित आहार और पोषण संबंधी परामर्श प्रदान करने लिए कहा। सभी आंगनबाड़ी केंद्रों में बच्चों के साथ-साथ उनकी माताओं को भी पोषण, स्वास्थ्य और देखभाल के बारे में जागरूक करने के लिए निर्देशित किया है। इसके साथ ही जिले के सभी आंगनबाड़ी केंद्रों में बौनापन, दुर्बलता और कमवजन बच्चों का वजन और ऊंचाई को लेकर अपडेट करने के निर्देश दिए है । साथ ही "टीएचआर" को कोई लेने नहीं आ रहा है तो टीएचआर को उनके घर छोड़ने के लिए निर्देशित किया है। इसके साथ ही महिला बाल विकास अधिकारी ने सभी आंगनबाड़ी केंद्रों में सभी खाद्य मेन्यू को सही से देने को निर्देश दिए, साथ ही कुपोषण चौपाल को सही से करने, आधार अपडेट, मोबाइल नम्बर अपडेट, आंगनबाड़ी केंद्रों का हैंडओवर नहीं हुआ है जानकारी भेजने के लिए कहा, इसके साथ ही सभी आंगनबाड़ी केंद्रों में पेयजल व्यवस्था, पोताई कार्य, सुकन्या समृद्धि योजना के अंतर्गत प्रति केन्द्र में 5 खाता खोलने के लिए सभी सुपरवाइजरों को निर्देश दिए। इसके साथ छत्तीसगढ़ महिला कोष से जितने स्व सहायता समूह ने ऋण लिया है, उसकी ऋण वसुली करने के निर्देश दिए और सभी परियोजना अधिकारियों को दिशा दर्शन योजना का लिस्ट भेजने के लिए निर्देशित किया। महतारी वंदन योजना और प्रधानमंत्री मातृ योजना में आधार अपडेट करने के लिए भी निर्देश दिये। महिला एवं बाल विकास अधिकारी शुभम बंसल ने आंगनबाड़ी केंद्रों की बेहतरी और उनकी सुचारु गतिविधियों को सुनिश्चित करने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्देश दिए। इस बैठक में जिले के सभी सुपरवाइजर और परियोजना अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

बाइक और साइकिल की जोरदार टक्कर में कोटेदार की दर्दनाक मौत

गोण्डा (एजेंसी)। कर्नलगंज तहसील क्षेत्र के गोड़वा नसीरपुर मार्ग पर एक भीषण सड़क हादसा हुआ, जिसमें 65 वर्षीय गिरीश तिवारी, जो कि गोड़वा गांव के कोटेदार थे, की साइकिल और बाइक की टक्कर में मौत हो गई। इस दुर्घटना में तीन अन्य लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। गिरीश तिवारी साइकिल से अपने घर लौट रहे थे, जब उनके सामने एक तेज रफ्तार बाइक सवार आ गया और जोरदार टक्कर हो गई। बाइक सवार युवक, 18 वर्षीय परवेज, 19 वर्षीय फरमान और 28 वर्षीय सजीम शाह भी गंभीर रूप से घायल हो गए। स्थानीय लोगों ने घायलों को कर्नलगंज सीएचसी भेजा, जहां प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें गोंडा मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया गया। गंभीर चोटों के कारण गिरीश तिवारी की मौत हो गई, जबकि बाइक सवार परवेज और फरमान की हालत भी नाजुक बताई जा रही है। हादसे के बाद परिजनों में कोहराम मच गया, और स्थानीय लोग सीएचसी पहुंच गए। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पंचनामा किया और पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। हादसे के कारण क्षेत्र में शोक की लहर है।

सुप्रीम कोर्ट ने ज्ञानवापी मामले में मुस्लिम पक्ष को जारी किया नोटिस

लखनऊ (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को काशी विश्वनाथ ज्ञानवापी मस्जिद विवाद मामले में ज्ञानवापी मस्जिद प्रबंधन समिति और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण को नोटिस जारी किया है। यह नोटिस हिंदू याचिकाकर्ताओं द्वारा दाखिल की गई याचिका पर जारी किया गया है।

हिंदू पक्ष के वकील मदन मोहन यादव ने कहा, हिंदू पक्ष द्वारा यह मामला सुप्रीम कोर्ट में ले जाया गया है। वजू खाना में शिवलिंग का अभी-भी पुरातत्व विभाग द्वारा सर्वेक्षण नहीं हुआ है। इससे यह साफ हो सके कि यह शिवलिंग है या फव्वारा। मुस्लिम पक्ष का दावा है कि यह फव्वारा है। एएसआई का सर्वे हुआ, जिसमें ज्ञानवापी के 12 तहखानों में से 8 तहखानों की एएसआई सर्वे नहीं हो पाया। इसके साथ ही मुख्य गुंबद के नीचे जो ज्योतिर्लिंग है, उसका भी सर्वे नहीं हो पाया है। इसी को लेकर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई थी। इसमें मुस्लिम पक्ष को नोटिस जारी किया गया है। मुस्लिम पक्ष को स्पष्ट कहा गया है कि वो दो सप्ताह के अंदर अपना जवाब दाखिल करें। हम आशा करते हैं कि वो जल्द ही अपना जवाब दाखिल करेंगे।

अधिवक्ता विष्णु शंकर जैन ने कहा, हमने 16 मई 2022 को दावा किया था कि तथाकथित वजू खाना में एक शिवलिंग पाया गया है। हालांकि, अंजुमन इंतजामिया ने इसका खंडन किया और कहा कि यह एक फव्वारा है। इसी को देखते हुए हमने इसका एएसआई सर्वेक्षण कराने की मांग की थी। हमने अब इस मामले में मुस्लिम पक्ष को नोटिस जारी किया गया है।

एक और एक ग्यारह बनकर काम करेंगे मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र-मुख्यमंत्री

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि कृषि आधारित उद्योगों को घर-घर पहुंचाने के लिए मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र मिलकर काम करेंगे। एक और एक दो नहीं, एक और एक ग्यारह बनकर काम करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शुक्रवार को नागपुर में आयोजित एग्रोविजन राष्ट्रीय कृषि मेले के शुभारंभ समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि यह मात्र मेला नहीं बल्कि यह भविष्य के सुशासन की समृद्धशाली भारत और प्रदेश के बनने की इसने नींव डाली है।

मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने कहा कि केन्द्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गड़करी सामाजिक व्यवस्थाओं को सुव्यवस्थित करने वाले सिद्धहस्त डॉक्टर हैं। उन्होंने कहा कि ग्रामीण कृषि आधारित कामों के आधार पर प्रदेश की पहचान होती है। मैं तारीफ करता हूँ कि मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र सरकार घर-घर में कृषि आधारित मत्स्य पालन, पशुपालन, दुग्ध उत्पादन जैसे घरेलू उद्योगों को प्रोत्साहित कर रही हैं। उन्होंने कहा कि उत्पादन, उत्पादकता तक ही सीमित नहीं है, बल्कि उत्पादों के लिए पर्याप्त बाजार उपलब्ध कराने पर भी फोकस किया जा रहा है। मध्यप्रदेश के मंत्री एवं अधिकारियों का एक दल मेले के अवलोकन एवं अध्ययन के लिए भेजा जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश सरकार ने गौ-पालकों की

आय बढ़ाने अनेक योजनाएं क्रियान्वित की हैं। उन्होंने कहा कि हम श्रीकृष्ण को मानने वाले हैं, जिनके घर गायें है वे गोपाल हैं और जिनके घर में गाय का कुल है वह घर गोकुल है। मराठी में बछड़े-बछिया को गौरा और गौरी कहते हैं। हमने गौ-पालकों को गाय के स्थान पर गौरी देने की योजना बनाई है। गौ-पालक 5 गौरी ले जाएं और अपने घर पर उनको बड़ा करें, गौ-पालक 2 गाय अपने घर में ही रख लें और 3 गायें हम खरीदेंगे। गौ-पालक दूध का विक्रय करेंगे उससे उनकी आय में वृद्धि होगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हम निराश्रित और ऐसी गायों को जिनकी दूध देने की क्षमता न्यून या शून्य हो गई है और गौ-पालकों ने उन्हें निराश्रित छोड़ दिया है, को आश्रय देने की दृष्टि से नगरीय क्षेत्रों में गौ-शालाओं का निर्माण करने जा रहे हैं। इस अनुक्रम में भोपाल में 10 हजार गायों की क्षमता वाली गौ-शाला का भूमि-पूजन होने जा रहा है। इससे सड़कों पर निराश्रित गौ-वंशों से होने वाली दुर्घटनाओं पर भी अंकुश लगेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमने मध्यप्रदेश में कांजी हाउस, खेड़ा जैसे कैद खानों को भी बंद करने का निर्णय लिया है। मूक पशुओं को जेल में रखने का कोई औचित्य नहीं है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि महाराष्ट्र मे आकर ऐसा लगा जैसे मैं अपने घर आ गया हूँ। माता अहिल्या और महादजी सिंधियां की पृष्ठ भूमि महाराष्ट्र राज्य से जुड़ी हुई है। माता अहिल्या को मैं प्रणाम करता हूँ, जिन्होंने उस समय खेती के लिए सिंचाई व्यवस्था के रूप में कुओं का निर्माण करवाया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उपस्थित कुलगुरू श्री शरद घटक, कुलगुरू श्री नितिन पाटिल, श्री अब्दुल्ला एवं पेसा एक्ट के प्रेसिडेंट श्री टी.आर. केशव, श्री दीपक शाह, विक्रम भाग एवं श्री जी. पाटिल का अभिवादन भी किया।

मणिपुर हिंसा-11 हजार सुरक्षाबल और भेजे जाएंगे

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर में 11 हजार सुरक्षाबलों और तैनात किया जाएगा। मणिपुर के चीफ सिक्योरिटी एडवाइजर कुलदीप सिंह ने शुक्रवार को कहा- आर्म्ड फोर्सेस की 90 कंपनियों के 10800 सुरक्षाबलों की तैनाती होगी। उन्होंने कहा- हमें 90 कंपनियां और मिल रही हैं। इसका बड़ा हिस्सा पहले ही इंफाल पहुंच चुका है। कंपनियों को अलग-अलग जगह भेजा जा रहा है। जल्द ही पूरे एरिया को कवर कर लेंगे।

मणिपुर में सीआरएफ एसएसबी, असम राइफल, आईटीबीपी सहित दूसरी आर्म्ड फोर्स की कंपनियां तैनात हैं। वहीं, 16 नवंबर को मुख्यमंत्री बिरेन सिंह और

17 विधायकों के घर हमले हुए थे। राज्य के मंत्री एल सुसींद्रो के घर को भी निशाना बनाया गया था। अब सुसींद्रो ने मणिपुर ईस्ट स्थित अपने घर को कंटीले तारों और लोहे के जाल से कवर किया है। उन्होंने कहा- संपत्ति की रक्षा करना हमारा संवैधानिक हक है। अगर भीड़ ने फिर हमला किया तो इसका जवाब दिया जाएगा। चीफ सिक्योरिटी एडवाइजर कुलदीप सिंह ने कहा- हमने पुख्ता इंतजाम किए हैं। हर जिले में नए कोऑर्डिनेशन सेल और जॉइंट कंट्रोल रूम तैयार किए जाएंगे।

जम्मू में अप्रवासी कश्मीरी पंडितों की दुकानों पर बुलडोजर चलाया

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में कश्मीरी पंडितों की दुकानों पर बुधवार को बुलडोजर चलाया गया। जम्मू विकास प्राधिकरण ने जम्मू शहर में मुठी कैंप के पास स्थित कश्मीरी पंडितों की दर्जन भर दुकानों को ढहा दिया। ये दुकानें लगभग तीन दशक पहले विस्थापित कश्मीरी पंडितों ने बनाई थीं। लोगों का कहना है कि दुकानों को बिना नोटिस दिए ढहा दिया गया। हम 90 के दशक में वापस आ गए हैं। लोग पिछले तीन दिन से विरोध कर रहे हैं। वह जेडीए के अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। जेडीए का कहना है कि दुकानें उनकी जमीन पर बनी थीं। आयुक्त अरविंद करवानी ने घटनास्थल का दौरा किया और प्रभावित परिवारों को आश्वासन दिया कि उनके लिए नई दुकानें बनाई जाएंगी। उन्होंने कहा कि जेडीए ने मुठी कैंप फेज-2 में एक शॉपिंग कॉम्प्लेक्स बनाने के लिए टेंडर जारी किया है।

केजरीवाल का रेवड़ी पर चर्चा अभियान

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के पूर्व सीएम और आम आदमी पार्टी संयोजक अरविंद केजरीवाल ने शुक्रवार को आप के रेवड़ी पर चर्चा अभियान की शुरुआत की। उन्होंने शुक्रवार को कहा कि दिल्ली विधानसभा चुनाव सिर पर हैं। हम आज से रेवड़ी पर चर्चा% अभियान की शुरू करने जा रहे हैं। पूरी दिल्ली में 65 हजार मीटिंग की जाएंगी। हमारी सरकार की 6 मुफ्त की रेवड़ियों वाला पर्चा बांटेंगे। उन्होंने कहा, हमने दिल्ली में बहुत काम किया है। हमने दिल्ली के लोगों को 6 मुफ्त सुविधाएं रेवाड़ियां दी हैं। हम दिल्ली के लोगों से पूछना चाहते हैं कि उन्हें ये रेवाड़ियां चाहिए या नहीं चाहिए। दिल्ली विधानसभा का मौजूदा कार्यकाल 23 फरवरी 2025 को खत्म हो रहा है। पिछला विधानसभा चुनाव फरवरी 2020 में हुआ था, जिसमें आम आदमी पार्टी ने पूर्ण बहुमत हासिल किया था और 70 में से 62 सीटें जीती थीं। केंद्र के पास उतनी ही पवार जितनी हमारे पास केजरीवाल ने कहा, आप कार्यकर्ता वोटर्स

से पूछेंगे कि पिछले 10 सालों में भाजपा ने दिल्ली के लिए क्या किया है, क्योंकि राष्ट्रीय राजधानी आधा राज्य है, यहां केंद्र सरकार के पास उतनी ही शक्तियां हैं, जितनी हमारे पास हैं। भाजपा 20 राज्यों में सत्ता में है। एक भी राज्य में वे ये मुफ्त रेवड़ियां नहीं देती है।

बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा ने मल्लिकार्जुन खड़गे को लिखा पत्र

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने मणिपुर हिंसा पर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे की ओर से हाल ही में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को लिखे गए पत्र पर कड़ी प्रतिक्रिया जाहिर की। नड्डा ने खड़गे को पत्र लिखकर आरोप लगाया कि मणिपुर संकट पर कांग्रेस राजनीति कर रही है।

भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे को नमस्कार करते हुए लिखा कि इस साल की शुरुआत में जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मणिपुर में हिंसा के मुद्दे पर बात कर रहे थे, तब आपने और आपकी पार्टी ने जिस तरीके से सदन से बाहर निकलकर इस गंभीर मुद्दे को अनदेखा किया, वह मेरे लिए हैरान करने वाला था। अब जब आपने मणिपुर पर राष्ट्रपति को पत्र लिखा है, तो यह देखकर अच्छा लगा कि आपकी पार्टी ने भारतीय संविधान के सर्वोच्च पद और उस पर आसीन राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के प्रति सम्मान व्यक्त किया। नड्डा ने कांग्रेस पर मणिपुर और अन्य उत्तर-पूर्वी राज्यों में कांग्रेस सरकारों की विफलताओं की याद दिलाई।

भोपाल में पराली जलाने पर रोक, उल्लंघन करने वालों पर होगी कार्रवाई

भोपाल (एजेंसी)। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में नरवाई (पराली) जलाने पर रोक लगा दी गई है। अब नरवाई जलाने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी यह आदेश दो माह तक प्रभावशील रहेगा। भोपाल के कलेक्टर और जिला मजिस्ट्रेट कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने गुरुवार की रात को नरवाई जलाने पर रोक लगाने का आदेश जारी किया। इस आदेश में कहा गया

है कि नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के निर्देशों का पालन किया जाएगा। इस आदेश के जरिए भोपाल की भौगोलिक सीमा के खेत में डंठल, नरवाई में आग लगाना पूरी तरह प्रतिबंधित किया गया है और इसका उल्लंघन करने वालों पर पर्यावरण विभाग भोपाल और ग्रीन ट्रिब्यूनल के प्रावधानों के तहत दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी।

ज्ञात हो कि फसल कटाई के बाद किसान अगली फसल के लिए खेत तैयार करने के उद्देश्य से आग लगाकर डंठलों को नष्ट कर देते हैं। इससे व्यापक अग्नि दुर्घटनाएं होने के साथ जनहानि की आशंका बनी रहती है।

मुलायम की जयंती पर रामगोपाल ने दी श्रद्धांजलि

इटावा (एजेंसी)। समाजवादी पार्टी के संस्थापक मुलायम सिंह यादव की जयंती पर पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव रामगोपाल यादव ने शुक्रवार को उन्हें श्रद्धांजलि दी। इस मौके पर उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा कि दो सीटों पर जनता ने नहीं, पुलिस ने वोट डाला है। सपा के राष्ट्रीय महासचिव रामगोपाल यादव ने मुलायम सिंह यादव की जयंती के मौके पर उन्हें श्रद्धांजलि देने उनकी समाधि स्थल पहुंचे। इस मौके बदायूं के सांसद आदित्य यादव भी मौजूद रहे। रामगोपाल यादव ने 20 नवंबर को हुए उपचुनाव को लेकर कहा कि दो सीटों पर चुनाव हुआ ही नहीं है, वहां जनता ने नहीं, पुलिस ने वोट डाला है। इलेक्शन कमीशन को कुंदरकी में, मीरापुर में स्वत: देखना चाहिए। 70 प्रतिशत बूथों पर असली मतदाता वोट देने पहुंचा ही नहीं है। वहां उन्हें रोककर पुलिस ने वोट डाला है।

उन्होंने मुलायम सिंह यादव की समाधि पर पुष्प अर्पित करते हुए उनको याद किया। दुनिया में न रहने पर उनकी कमी को बताते हुए उन्होंने कहा कि नेताजी की कमी हमेशा खलेगी, उन्होंने गरीबों को और असहाय लोगों को समाज की मुख्यधारा में जोड़ने का काम किया। ज्ञात हो कि उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और सपा संरक्षक मुलायम सिंह यादव का 22 नवंबर को जन्म हुआ था। वह

उदयपुर में भीषण सड़क हादसा, कार सवार 5 लोगों की मौत

उदयपुर (एजेंसी)। राजस्थान के उदयपुर जिले में देर रात भीषण सड़क हादसा हो गया। जिसमें कार सवार पांच लोगों की मौत हो गई है। उदयपुर जिले के सुखेर थाना क्षेत्र के अंबेरी में गुरुवार रात को एक बड़ा हादसा हुआ, जिसमें पांच युवकों की जान चली गई। यह हादसा रात करीब 12 बजे हुआ, जब अंबेरी से देबारी की तरफ जा रही एक कार गलत लेन में आकर ट्रक से टकरा गई। इस दुर्घटना में कार सवार सभी पांच युवक गंभीर रूप से घायल हो गए और बाद में उनकी मौत हो गई। हादसे के समय कार के ड्राइवर ने इसे बचाने का प्रयास किया, लेकिन उसे पर्याप्त जगह नहीं मिल पाई और वह सीधे ट्रक से टकरा गया। इसके परिणामस्वरूप कार पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई और कार में सवार सभी पांच युवकों की मौके पर ही मौत हो गई।

मृतकों में हेड कांस्टेबल का बेटा भी शामिल है। पुलिस ने ट्रक को जब्त कर लिया है और मामले की जांच शुरू कर दी है। घटना की सूचना मिलते ही सुखेर थाने से पुलिस मौके पर पहुंची और सभी मृतकों के शवों को पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भेज दिया। पुलिस अब इस दुर्घटना के कारणों की जांच में जुटी हुई है। पुलिस यह जानने की कोशिश कर रही है कि कार चालक इतनी तेजी से गलत दिशा में क्यों जा रहा था। उत्तर प्रदेश में भी 20 नवंबर की रात को करीब साढ़े 8 बजे एक भीषण सड़क हादसे में ट्रैक्टर और बाइक की भिड़ंत में तीन युवकों की मौत हो गई थी। यूपी के बिजनौर में यह हादसा उस समय हुआ जब बाइक सवार गन्ने से भरे ट्रैक्टर ट्रॉली से टकरा गए,

जिसके बाद बाइक सवारों ने दम तोड़ दिया।

उल्लेखनीय है कि घने कोहरे के कारण भी उत्तर भारत में इस समय हादसों की संख्या लगातार बढ़ रही है। 16 नवंबर को भी बिजनौर में एक ऐसा ही दर्दनाक हादसा हुआ था, जिसमें 7 लोगों की जान चली गई थी। तब कार और ऑटो की भिड़ंत हो गई थी। घने कोहरे के कारण धामपुर के देहरादून नैनीताल नेशनल हाईवे पर एक तेज रफ्तार कार ने श्री व्हीलर वाहन को पीछे से टक्कर मार दी थी। हादसे में श्री व्हीलर वाहन के चालक समेत सात लोगों की मौत हो गई थी।

घर में आग लगने से 2 बच्चों के साथ जिंदा जली मां

पटना (एजेंसी)। बिहार के भागलपुर में पीरपैंती प्रखंड के अठनिया दियारा में दर्दनाक हादसा हुआ। यहां तीन लोगों की जिंदा जलकर मौत हो गई, जबकि एक व्यक्ति बुरी तरह झुलस गया, जिसे भागलपुर के मायागंज अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। वहां उसका उपचार जारी है। जानकारी के मुताबिक, अठनिया दियारा में गौतम यादव अपनी पत्नी वर्षा देवी (30), एक बेटा प्रत्युष कुमार (7) और बेटी ज्योति कुमारी (4) के साथ घर में सोए हुए थे। इस बीच, गुरुवार देर रात घर में आग लग गई। अंदाजा लगाया जा रहा है कि गहरी नींद मे रहने के कारण गौतम यादव की पत्नी, बेटी, बेटा घर से निकल नहीं पाए पाए, जिससे तीनों की जलकर मौत हो गई, जबकि गृहस्वामी गौतम यादव किसी तरह आग के बीच से निकलने में कामयाब रहा। ग्रामीणों ने जख्मी गौतम यादव को रेफरल अस्पताल में इलाज करने के लिए भर्ती कराया, जहां उसकी हालत गंभीर बनी हुई है। घटना की जानकारी मिलने के बाद पीरपैंती थाना पुलिस, बीडीओ, सीओ सहित अग्निशमन वाहन मौके पर पहुंचे। पीरपैंती के थानाध्यक्ष नीरज कुमार ने घटना के बारे में पूरी जानकारी दी। कहा, अभी तक आग लगने की वजह साफ नहीं हो पाई है। हम आग लगने की वजह का पता लगा रहे हैं

इस घटना में तीन लोगों की मौत हो गई है और एक शख्स गंभीर रूप से झुलस गया है, जिसका इलाज कराया जा रहा है। इसके बाद राहत एवं बचाव कार्य का सिलसिला शुरू किया गया।

मौके पर पहुंचे पुलिस ने सभी के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। वहीं, अधिकारियों ने पीड़ित परिवार को हर संभव आर्थिक सहायता मुहैया कराने का आश्वासन दिया है। स्थानीय ग्रामीणों ने बताया कि पीड़ित परिवार खाना खाकर सोए हुए थे। इस बीच, आग लग गई। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप धारण कर लिया और पूरा परिवार इसकी भेंट चढ़ गया। गौतम यादव अभी बयान देने की स्थिति में नहीं है। पुलिस के मुताबिक थोड़ा बेहतर होते ही उसका बयान दर्ज होगा जिससे आग लगने के कारणों का कुछ पता लग सके।

पर्थ टेस्ट की प्लेइंग-11 में क्यों नहीं हैं शुभमन गिल? खुद बीसीसीआई ने बताई वजह

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच पहला टेस्ट मैच पर्थ में खेला जाने वाला है, जहां टॉस जीतकर कप्तान जसप्रीत बुमराह ने बल्लेबाजी का फैसला किया है. लेकिन, जब प्लेइंग इलेवन में शुभमन गिल का नाम नहीं दिखा, तो हर कोई हैरान रह गया. हालांकि, बीसीसीआई ने अब खुद पोस्ट कर इस बात की जानकारी दी है कि आखिर गिल प्लेइंग-इलेवन का हिस्सा क्यों नहीं हैं.

भारतीय क्रिकेट टीम को पर्थ टेस्ट शुरू होने से पहले ही बड़ा झटका लगा है. टीम के स्टार बल्लेबाज शुभमन गिल प्लेइंग इलेवन का हिस्सा नहीं हैं. हर कोई इसे देखकर चौक गया, क्योंकि वह नंबर-3 पर टीम इंडिया के लिए अहम पारी खेलने की काबिलियत रखते हैं. हालांकि, बीसीसीआई ने खुद सोशल मीडिया पर पोस्ट कर जानकारी दी है कि वह इंजरी की वजह से प्लेइंग-11 से बाहर हैं. पर्थ टेस्ट मैच में भारत की ओर से 2 युवाओं को डेब्यू करने का मौका मिला है. नितीश रेड्डी और हर्षित राणा को विराट कोहली और रविचंद्रन अश्विन के हाथों टेस्ट कैप सौंपी गई है. वहीं, नंबर-3 पर शुभमन गिल की जगह देवदत्त पडिक्कल को मौका मिला है.

ऑस्ट्रेलिया- उस्मान ख्वाजा, नाथन मैकस्वीनी, मार्नस लाबुशेन, स्टीवन स्मिथ, ट्रैविस हेड, मिशेल मार्श, एलेक्स कैरी (विकेटकीपर), पैट कमिंस (कप्तान), मिशेल स्टार्क, नाथन लियोन, जोश हेज़लवुड

भारत- केएल राहुल, यशस्वी जयसवाल, देवदत्त पडिक्कल, विराट कोहली, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), ध्रुव जुरेल, नितीश रेड्डी, वाशिंगटन सुंदर, हर्षित राणा, जसप्रित बुमरा (कप्तान), मोहम्मद सिराज।

अंतर्राष्ट्रीय कबड्डी महासंघ ने विश्व सुपर कबड्डी लीग 2025 को मंजूरी दी

नई दिल्ली (एजेंसी)। अंतर्राष्ट्रीय कबड्डी महासंघ (आईकेएफ) ने विश्व सुपर कबड्डी लीग (डब्ल्यूएसकेएल) 2025 के आयोजन के लिए आधिकारिक तौर पर अनुमति दे दी है। लीग का आयोजन दक्षिण पूर्व एशियाई कबड्डी महासंघ (एसईएकेएफ) और थाईलैंड कबड्डी संघ के सहयोग से किया जा रहा है। डब्ल्यूएसकेएल के आयोजक निकाय एसजे अपलिफ्ट कबड्डी प्राइवेट लिमिटेड को बधाई संदेश में आईकेएफ ने कबड्डी के प्रति उनके समर्पण और दूरदर्शिता की सराहना की। कबड्डी लीग शुरू करना कोई छोटी उपलब्धि नहीं है। इसके लिए न केवल खेल की गहरी समझ की आवश्यकता होती है, बल्कि असाधारण संगठनात्मक कौशल और इस पारंपरिक खेल को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता भी होनी चाहिए। आईकेएफ के बयान में कहा गया है, आपके प्रयास युवा एथलीटों को प्रेरित करेंगे और कबड्डी के विकास और लोकप्रियता में महत्वपूर्ण योगदान देंगे। डब्ल्यूएसकेएल में आईकेएफ सदस्य देशों के खिलाड़ी शामिल होंगे, जो मैदान में उतरने से पहले खिलाड़ियों की नीलामी में भाग लेंगे।

इससे न केवल खिलाड़ियों को अपने कौशल का प्रदर्शन करने का अवसर मिलेगा, बल्कि लीग को विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त टूर्नामेंट प्राइवेट लिमिटेड को 15 साल की अवधि के लिए डब्ल्यूएसकेएल के आयोजन के पूर्ण और अन्य अधिकार प्रदान किए, जिससे लीग के विकास और सफलता के लिए दीर्घकालिक दृष्टिकोण सुनिश्चित हुआ।

राफेल नडाल ने खेला अपना आखिरी मैच

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिग्गज टेनिस खिलाड़ी राफेल नडाल ने 19 नवंबर को अपना आखिरी मुकाबला खेला। इस मुकाबले में उन्हें 80वीं रैंकिंग वाले बोटिक वान डी जैडस्चुल्प ने सीधे सेटों में 6-4,6-4 से हरा दिया। इसके बाद मैच देख रहे 10,000 दर्शकों और नडाल के परिवार ने उनका खड़े होकर अभिवादन किया। ये देख नडाल की आंखों में आंसू आ गए। डेविस कप के मुकाबले में जब राष्ट्रगान हुआ, तब भी नडाल भावुक हो गए थे।पूरी खबर पर नजर डालते हैं। इस महान टेनिस खिलाड़ी ने पिछले महीने संन्यास का ऐलान किया था। 38 साल के खिलाड़ी की गिनती दुनिया के महानतम टेनिस खिलाड़ियों में होती है।नडाल (22) से ज्यादा ग्रैंड स्लैम सिर्फ नोवाक जोकोविच (24) ही जीत पाए हैं। नडाल को %लाल बजरी का बादशाह%भी कहा जाता है।नडाल ने अपने आखिरी मुकाबले के बाद सबका आभार दिया। उन्होंने मैच के बाद कहा, विश्व में मुझे इतना स्नेह प्राप्त हुआ। मैं खुद को बहुत सौभाग्यशाली महसूस करता हूं। नडाल ने आगे कहा, मैं पूरी स्पेनिश टीम को शुक्रिया अदा करना चाहता हूं। आप सभी ने मुझे डेविस कप खेलने का मौका दिया।

जोश हेजलवुड ने चार विकेट झटके, ऑस्ट्रेलिया ने भारत को 150 रन पर समेटा

पर्थ (एजेंसी)। तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड ने 13 ओवर में 29 रन देकर 4 विकेट चटकाए, जबकि बाकी तेज गेंदबाजों ने दो-दो विकेट चटकाए, जिससे ऑस्ट्रेलिया ने शुक्रवार को पर्थ स्टेडियम में पहले टेस्ट के पहले दिन चाय के समय भारत को सिर्फ 150 रन पर समेट दिया।

भारत ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। ऑस्ट्रेलिया ने भारत पर दबाव बनाने के लिए अपनी लाइन और लेंथ के साथ अथक प्रयास किया और पिच पर अच्छी मूवमेंट और उछाल से उन्हें मदद मिली। भारत के पास अपने बल्लेबाजी प्रदर्शन के बारे में दिखाने के लिए कुछ खास नहीं था, क्योंकि नौ बल्लेबाज विकेट के पीछे कैच आउट हुए।

पहले बल्लेबाजी करने के बाद भारत के लिए केवल केएल राहुल (26), ऋषभ पंत (37) और डेब्यू करने वाले नीतीश कुमार रेड्डी (41) ही बड़ा योगदान दे पाए। सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल ने स्टार्क की गेंद पर एक बड़ा किनारा लिया और गली में डेब्यू करने वाले नाथन मैकस्वीनी को एक नियमित कैच देकर आठ गेंदों पर शून्य पर आउट हो गए। राहुल को तेज गेंदबाजों ने कड़ी परीक्षा दी, खासकर मिशेल स्टार्क ने उनके बाहरी छोर पर लगातार सवाल पूछे और बाद में पैट कमिंस ने भी उनकी परीक्षा ली, लेकिन वह ऑफ स्टंप के बाहर किसी भी चीज से सावधान रहे। दूसरे छोर से देवदत्त पडिक्कल को मुक्त होने में संघर्ष करना पड़ा, क्योंकि स्टार्क उनके बाहरी छोर को परखते रहे, इसके बाद हेजलवुड ने उन्हें पैड, जांघ और बगल पर शॉर्ट बॉल से निशाना बनाया।

पडिक्कल की असहज स्थिति 23 गेंदों पर शून्य पर समाप्त हुई, जब उन्होंने हेजलवुड की एक लेंथ बॉल का बचाव किया, जो बाहरी छोर से कीपर के पास चली गई। भारत ने अपना पहला बाउंड्री तब हासिल किया जब राहुल ने कमिंस की एक छोटी गेंद से बचने की कोशिश की और गेंद किनारे से निकलकर स्लिप कॉर्डन के ऊपर से चार रन के लिए चली गई। क्रीज के बाहर खड़े और फ्रंट फुट पर खेलने के लिए अत्यधिक उत्सुक विराट कोहली को हेजलवुड ने दोनों किनारों पर छकाया।

आखिरकार तेज गेंदबाज ने आखिरी बाजी तब हासिल की जब उन्होंने ऑफ स्टंप के बाहर की गेंद पर अतिरिक्त उछाल लिया और कोहली के बाहरी किनारे पर गेंद को पकड़ा, जिसे पहली स्लिप ने कैच कर लिया। राहुल ने दो ऑफ-साइड बाउंड्री लगाने का आत्मविश्वास दिखाया, लेकिन 26 रन पर स्टार्क की लेंथ बॉल को डिफेंड करने की कोशिश में कैच आउट हो गए। ऑस्ट्रेलिया ने राहुल पर फैसला अपने पक्ष में लिया, लेकिन रीप्ले में दो आवाजें दिखाई दीं और सबसे महत्वपूर्ण बात यह रही कि थर्ड अंपायर रिचर्ड केटलबोरो को ऑफसाइड से फ्रंट-ऑन एंगल नहीं दिया गया, जिससे यह सवाल उठा कि क्या बल्लेबाज को आउट देने के लिए पर्याप्त निर्णायक सबूत थे। राहुल के आउट होने से ऑस्ट्रेलिया ने पहला सत्र आसानी से जीत लिया, जिसका श्रेय स्टार्क और हेजलवुड को जाता है। ऑस्ट्रेलिया ने लंच के बाद के सत्र की शुरुआत में और सफलता हासिल की, जब मिशेल मार्श ने ध्रुव जुरेल को आगे की ओर खींचा और उनका बाहरी किनारा थर्ड स्लिप द्वारा सुरक्षित रूप से पकड़ा गया। उन्होंने इसके बाद वाशिंगटन सुंदर को शरीर से दूर धकेला और उन्हें कैच आउट करवा दिया, जिससे भारत का स्कोर 73/6 हो गया।

इस बीच, पंत ने कमिंस पर किचन सिंक फेंका और स्लिप कॉर्डन के ऊपर से एक फ्लाइंग फोर प्राप्त किया, इसके बाद मार्श को मिड-ऑफ के माध्यम से एक और बाउंड्री के लिए मारा। दूसरे छोर से, नीतीश ने चार पर नाथन लियोन की गेंद पर इनसाइड-आउट ड्राइव खेलकर चमक बिखेरी, और इसके बाद उन्हें कवर-ड्राइव मारा।

जोफ़ा आर्चर को फिर से आईपीएल ऑक्शन लिस्ट में जोड़ा गया

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंग्लैंड के तेज़ गेंदबाज़ जोफ़्रा आर्चर को आईपीएल नीलामी सूची में फिर से शामिल कर लिया गया है। कुछ दिन पहले ही उनका नाम उस शॉर्टलिस्ट में नहीं था, जो पिछले सप्ताह के अंत में फ्रेंचाइज़ियों को भेजी गई थी। ईएसपीएनक्रिकइंफो को जानकारी मिली है कि आर्चर को सूची में शामिल करने की सूचना फ्रेंचाइज़ियों को अनौपचारिक रूप से गुरुवार को दी गई। दो दिवसीय आईपीएल मेगा नीलामी 24-25 नवंबर को सऊदी अरब के जेद्दा में आयोजित की जाएगी।

आईपीएल ने अभी तक इस ख़बर को सार्वजनिक नहीं किया है, लेकिन फ्रेंचाइज़ियों के लिए यह देखना दिलचस्प होगा कि आर्चर किस सेट में आते हैं। अपने इंग्लैंड टीम के साथी मार्क वुड के साथ, आर्चर भी उन प्रमुख खिलाड़ियों में शामिल थे, जो आईपीएल द्वारा फ्रेंचाइज़ियों को भेजी गई 574 खिलाड़ियों की शॉर्टलिस्ट में शामिल नहीं थे। उनका नाम उस लिस्ट में नहीं होने से काफ़ी सवाल भी उठे थे, क्योंकि दोनों ही तेज़ गेंदबाज आईपीएल की मूल लिस्ट का हिस्सा थे। आर्चर ने नीलामी के लिए 2 करोड़ रुपये का अधिकतम बेस प्राइस तय किया था।

ईएसपीएन क्रिकइंफो को जानकारी मिली है कि आर्चर और उनके प्रतिनिधि इस सप्ताह ईसीबी और बीसीसीआई के साथ चर्चा कर रहे थे, ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि अगर उनका नाम शॉर्टलिस्ट में शामिल नहीं होगा, तो इसका क्या असर होगा। आर्चर के पास इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) के साथ एक सेंट्रल कॉन्ट्रैक्ट है, जिसके कारण उनके कार्यभार की देखभाल ईसीबी भी करता है।

आर्चर ने 2021 की शुरुआत के बाद

से टेस्ट क्रिकेट नहीं खेला है, लेकिन इंग्लैंड को उम्मीद है कि वह अगले साल भारत और ऑस्ट्रेलिया के ख़िलाफ़ टेस्ट खेलेंगे। इंग्लैंड क्रिकेट के मैनेजिंग डायरेक्टर रॉब की ने पिछले सप्ताह संडे टाइम्स को बताया, जोफ़्रा के साथ सबकुछ योजना के मुताबिक चल रहा है। क्या वह अगले गर्मियों में टेस्ट खेल सकते हैं? मेरी सभी उंगलियां क्रॉस हैं, शायद हां।

आईपीएल में अप्रैल और मई का समय बिताना आर्चर के लिए इसे कठिन बना देगा, क्योंकि इससे वह काउंटी चैम्पियनशिप के शुरुआती चरण में ससेक्स के लिए नहीं खेल पाएंगे। पिछले साल ईसीबी ने आर्चर को आईपीएल नीलामी में शामिल होने से रोक दिया था ताकि वह चोट से जल्दबाज़ी में वापसी न करें। हालांकि इस साल अगर उन्हें रोका जाता, तो वह 2027 तक आईपीएल में हिस्सा लेने में असमर्थ हो जाते। आईपीएल ने इस नीलामी चक्र के लिए नए नियम पेश किए हैं, जिनके अनुसार ऐसे खिलाड़ी, जिन्होंने पहले लीग में हिस्सा लिया है, लेकिन मेगा-नीलामी के लिए रजिस्टर नहीं किया, उन्हें अगले मिनी-नीलामी के लिए रजिस्टर करने की अनुमति नहीं होगी। एक अन्य नियम के तहत, यदि कोई खिलाड़ी नीलामी में ख़रीदा जाता है और बिना उचित कारण अपना नाम वापस लेता है, तो उसे दो साल के लिए प्रतिबंध का सामना करना पड़ेगा।

29 वर्षीय आर्चर ने इस साल लंबी चोट के बाद वापसी की थी और पाकिस्तान, ऑस्ट्रेलिया और वेस्टइंडीज़ के ख़िलाफ़ इंग्लैंड की व्हाइट-बॉल सीरीज़ में हिस्सा लिया था। उन्होंने हाल ही में कैरेबियाई दौरे पर तीनों वनडे मैच खेले।

मैच के बीच मेगा ऑक्शन के बारे में बात कर रहे थे खिलाड़ी

पर्थ (एजेंसी)। 24 और 25 नवंबर को आईपीएल 2025 मेगा ऑक्शन होने वाला है, जिसकी हर तरफ चर्चा हो रही है. फैंस और फ्रेंचाइजियां ही नहीं खिलाड़ी भी इसके लिए काफी उत्साहित हैं. भारत-ऑस्ट्रेलिया के बीच पर्थ में खेले जा रहे टेस्ट मैच के दौरान नाथन लॉयन और ऋषभ पंत भी आईपीएल नीलामी के बारे में बात करते दिखे. इसका वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है. आइए आपको बताते हैं कि दोनों के बीच आखिर क्या बात हो रही थी. आईपीएल 2025 मेगा ऑक्शन का खुमार हर तरफ है. इस बार की नीलामी बेहद खास होने वाली है, क्योंकि इसमें ऋषभ पंत, केएल राहुल और श्रेयस अय्यर जैसे 12 मार्की प्लेयर्स हिस्सा ले रहे हैं. अब भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच खेले जा रहे पर्थ टेस्ट मैच के दौरान कंगारू स्पिनर और ऋषभ पंत के बीच नीलामी को लेकर बातचीत हुई. नाथन लॉयन ने पंत से पूछा- मेगा ऑक्शन में आप कहां जा रहे हैं? हालांकि, जवाब में पंत ने कहा- मुझे कोई आइडिया नहीं है. इन दोनों का ये वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है. आईपीएल 2025 मेगा ऑक्शन में ऋषभ पंत ने 2 करोड़ रुपये की बेस प्राइज के साथ अपना नाम ड्राफ्ट किया है. लेकिन, इस खिलाड़ी को अगर 25 से 30 करोड़ की रकम मिल जाए, तो किसी को हैरानी नहीं होगी. जी हां, पंत नीलामी में शामिल सबसे डिमांडिंग प्लेयर हैं. उन्हें खरीदने वाली टीम को एक विस्फोटक बल्लेबाज, तेजतर्रार विकेटकीपर और कैप्टेंसी ऑप्शन भी मिलेगा. इसलिए कोई भी टीम इस खिलाड़ी को खरीदने के लिए जान झोंकती दिखेंगी.

एक ओर जहां 24 और 25 नवंबर को नीलामी होने वाली है. वहीं, आज यानी 22 नवंबर से भारत-ऑस्ट्रेलिया के बीच बॉर्डर-गावस्कर सीरीज का पहला टेस्ट मैच शुरू हो गया है।

पर्थ टेस्ट : विवादित डीआरएस कॉल आउट होने से निराश हुए केएल राहुल

पर्थ (एजेंसी)। पर्थ स्टेडियम में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहले बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी टेस्ट के दौरान भारतीय ओपनर केएल राहुल विवादित तरीके से आउट हो गए।

राहुल 23वें ओवर में मिचेल स्टार्क की गेंद पर डिफेंड करने की कोशिश कर रहे थे। इसके बाद मैदानी अंपायर ने उन्हें नॉट आउट दिया था। लेकिन ऑस्ट्रेलिया ने डीआरएस लिया, क्योंकि उन्हें लगा कि गेंद बल्ले का किनारा लेकर विकेटकीपर के पास गई थी।

रिव्यू में थर्ड अंपायर रिचर्ड इलिंगवर्थ ने अल्ट्रा-एज पर एक स्पाइक देखकर माना कि राहुल के बल्ले का किनारा गेंद से लगा था। हालांकि, यह भी दिखा कि बल्ला पैड से टकरा सकता था। इलिंगवर्थ ने फ्रंट-ऑन एंगल मांगा, लेकिन

उन्हें यह नहीं दिया गया। मजबूरी में उन्हें पीछे से मिले अधूरे एंगल के आधार पर फैसला करना पड़ा।

जब आउट का फैसला स्क्रीन पर दिखा, तो राहुल हैरान रह गए और ड्रेसिंग रूम की ओर जाते हुए उन्होंने अपना सिर हिला दिया। उन्होंने पहली पारी में 74 गेंदों पर 26 रन बनाए थे। इस फैसले पर कमेंटेटर भी चकित रह गए।

भारत के पूर्व कोच रवि शास्त्री ने फॉक्स स्पोर्ट्स पर कहा, मुझे नहीं लगा कि तीसरे अंपायर के पास मैदानी अंपायर का फैसला पलटने के लिए पर्याप्त सबूत थे।

ऑस्ट्रेलिया के पूर्व गेंदबाज केरी ओ'कीफ ने भी सहमति जताई। उन्होंने कहा, राहुल बदकिस्मत रहे। शायद बल्ला पैड से टकराया होगा। हॉट स्पॉट तकनीक होती, तो यह साफ हो जाता। राहुल का रिएक्शन बता रहा था कि वह निराश थे। चैनल 7 पर ऑस्ट्रेलिया के पूर्व ओपनर मैथ्यू हेडन ने कहा, गेंद गुजरने के समय बल्ला और पैड साथ नहीं थे। स्निको ने जो आवाज पकड़ी, वह शायद बल्ला-पैड के टकराने की थी, गेंद के किनारे की नहीं।

लेकिन पूर्व अंपायर साइमन टॉफेल ने कहा, थर्ड अंपायर ने नतीजे पर पहुंचने की कोशिश की, लेकिन उन्हें सभी कैमरा एंगल नहीं मिले। मुझे लगता है, गेंद ने बल्ले का बाहरी किनारा छुआ।

सहवाग ने कूच बिहार ट्रॉफी में 297 रन बनाने पर बेटे आर्यवीर की सराहना की

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के पूर्व सलामी बल्लेबाज वीरेंद्र सहवाग ने शुक्रवार को अपने बेटे आर्यवीर सहवाग की सराहना की, जिन्होंने शिलांग के पोलो में एमसीए ग्राउंड पर अंडर-19 पुरुष कूच बिहार ट्रॉफी एलीट ग्रुप ए मैच में मेघालय के खिलाफ दिल्ली के लिए खेलते हुए 297 रन बनाए। सहवाग ने एक्स पर लिखा, जिसे पहले ट्विटर के नाम से जाना जाता था,अच्छा खेला, आर्यवीर सहवाग। 23 रन से फेरारी चूक गए। लेकिन शाबाश, जोश बनाए रखो और आप और भी कई बड़े शतक तथा दोहरे और तिहरे शतक बनाएं। खेल जाओ..।

297 रन की मैराथन पारी के दौरान, किशोर ने 51 चौके और तीन छक्के जमाए और दिल्ली को 623/5 पर पहली पारी घोषित करने से पहले विशाल स्कोर तक पहुंचाया।

पहले बल्लेबाजी करने उतरी मेघालय ने अपनी पहली पारी में 260 रन बनाए। जवाब में दिल्ली के सलामी बल्लेबाज आर्यवीर और अर्नव बुग्गा ने पहले विकेट के लिए 180 रन जोड़े, जबकि बाद में आर्यवीर 108 गेंदों पर 19 चौकों और तीन छक्कों की मदद से 114 रन बनाकर आउट हो गए। विकेटकीपर-बल्लेबाज वंश जेटली ने 43 रन जोड़े, जिसके बाद धन्या नाकरा और आर्यवीर ने पारी को आगे बढ़ाया और गुरुवार को खेल समाप्त होने तक 468/2 के स्कोर पर 208 रन की बढ़त हासिल कर ली।

मेघालय के कप्तान दीपांकर बरुआ ने दिल्ली की गति को रोकने के लिए विभिन्न गेंदबाजी संयोजनों की कोशिश की, लेकिन मेहमान टीम ने सपाट पिच का पूरा फायदा उठाया। मेघालय के पहली पारी के 260 रन के स्कोर को पार करने के बाद, दिल्ली ने आर्यवीर और धन्या के बीच तीसरे विकेट के लिए 188 रन की शानदार साझेदारी करके अपनी स्थिति मजबूत कर ली, जिससे मेजबान टीम की मुश्किलें और बढ़ गईं।

इससे पहले दिन में मेघालय ने 239/7 से अपनी पारी फिर से शुरू की, लेकिन केवल 21 रन और जोड़ पाए। क्षितिज सिंघानिया, जो रात भर 52 रन बनाकर नाबाद थे, 62 रन बनाकर आउट हो गए, लेकिन उधव मोहन ने 4/88 का आंकड़ा पार किया। आउट होने से पहले अंगकित तमांग ने अपने रात के स्कोर 29 में सात और रन जोड़े। आर्यवीर ने अक्टूबर में वीनू मांकड़ ट्रॉफी में पदार्पण किया, जिसमें मणिपुर के खिलाफ 49 रन बनाकर दिल्ली को छह विकेट से जीत दिलाई।

कबाड़ी मोहल्ला और धोबिया टंकी इलाके में आकर्षण का केंद्र बनी थाने की नीली अपाची वाहन

कोरेक्स का कमाल, कार्यवाही में बेअसर साबित हो रहे कोतवाली के कोतवाल, अपराधियों के हौसले बुलंदी पर

थानेदार की आंखों में धूल झोंककर सिपाही साहब ने बनाया सेटिंगबाज खेल

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शहर का सबसे व्यस्ततम थाना सिटी कोतवाली उपनिरीक्षक की पदस्थापना के बाद बेलगाम थाना होता जा रहा है तथा यहां पर लगातार नशे के कारोबार में वृद्धि हो रही है और सटोरियों के हौसले भी बुलंद हैं, फिर भी पुलिस की टीम नशे के कारोबार पर अंकुश लगाने में नाकामयाब साबित हुई है। जिसके कारण अपराधियों के हौसले बुलंदी पर हैं और वह खुलेआम नशे के कारोबार का संचालन कर रहे हैं वहीं कोतवाली थाना क्षेत्र में इन दिनों जुएं के खेल का प्रचलन भी तेजी के साथ बढ़ रहा है जहां धोबिया टंकी मोहल्ला और रानीगंज इलाके में कारोबारी लाखों का दांव लगाकर लोगों को इस खेल की ओर आकर्षित कर रहे हैं।

दरअसल सिटी कोतवाली थाना क्षेत्र में स्थित कबाड़ी मोहल्ला कोरेक्स का गढ़ बना हुआ है जहां अवैध मादक नशीली सिरप की बिक्री के लिए लोगों ने बड़ी बड़ी सेटिंग लगाकर करोड़ों के कोरेक्स व्यापार का संचालन करना शुरू किया है वहीं यह कारोबार कबाड़ी मोहल्ले से होकर रानीगंज और धोबिया टंकी इलाके में भी अपने पैर पसार चुका है इसके साथ धोबिया टंकी में जुएं के कारोबार का मुख्य संचालन तेज गति से शुरू हुआ है जिसमें लाखों की सट्टा पर्ची बांटी जाती है तथा इस काम में पुलिस के कर्मचारी और कई पत्रकारों का मैनेजमेंट होता है जो सेटिंग बनकर पुलिस की कार्यवाही को रोकते हैं

बताया जा रहा है कि कबाड़ी मोहल्ले के कोरेक्स कारोबार में और धोबिया टंकी में संचालित कोरेक्स तथा जुएं के कारोबार में मुख्य रूप से कोतवाली थाने की नीली अपाची वाहन शामिल रहती है जो सेटिंगबाज माफिया को संरक्षण देकर उनसे लाखों की कमाई करती है। विश्वनीय सूत्रों की माने तो नीली रंग की अपाची वाहन कोतवाली थाना क्षेत्र के तमाम अपराधी इलाकों का मुख्य केंद्र बिंदु है जिसके माध्यम से अपराधिक ग्राफ में लगातार इजाफा हो रहा है और कोतवाली के कोतवाल की आंखों में धूल झोंककर लोग कोरेक्स और जुएं का संचालन तेज गति से कर रहे हैं। जानकारी के मुताबिक शहर के हृदय स्थल जय स्तंभ चौक पर स्थित कबाड़ी मोहल्ले में कोरेक्स का मुख्य कारोबार किया जाता है जहां पुलिस तथा राजनेताओं की सरपरस्ती में अवैध कफ सिरप की बिक्री की जाती है मगर इस अवैध कारोबार पर कोई कार्यवाही नहीं हो पाती इसका मुख्य कारण निकलकर सामने आया है इस इलाके का 2 थानों के बीच में स्थित होना। सिटी कोतवाली और सिविल लाइन थाने यह दोनों ही थाने कबाड़ी मोहल्ला इलाके में आते हैं और दोनों ही थानों के प्रभारी इसी फेर में फंसकर कार्यवाही से कतराते हैं। हालांकि फिर भी बीते दिनों पुलिस की टीम ने यहां पर नाम मात्र की कार्यवाही करके कारोबारियों को निशाने पर लिया था परंतु इस छोटी सी कार्यवाही ने थाने में तैनात छोटे कर्मचारियों का रेट बढ़ाने में अहम कार्यवाही बनकर सामने आई ।

कलेक्टर और एसपी कानून और व्यवस्था की कड़ी निगरानी करें

गीता जयंती के कार्यक्रम हर शहर में आयोजित करें

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से अधिकारियों को निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि जिले में कानून और व्यवस्था बनाए रखने की जिम्मेदारी कलेक्टर और एसपी की है। कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए दोनो समन्वय से कार्य करते हुए सही निर्णय लेकर कठोर कार्यवाही करें। नशे के कारोबार में लिप्त अपराधियों को जेल का रास्ता दिखाएं। त्यौहारों के दौरान कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए उचित प्रबंध करें। डीजे तथा अन्य ध्वनि विस्तार यंत्रों पर भी कड़ा नियंत्रण रखें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि कलेक्टर खाद वितरण केन्द्रों में समुचित व्यवस्था करके किसानों को खाद का वितरण कराएं। खाद की उपलब्धता तथा वितरण की नियमित जानकारी प्रेसनोट और सोशल मीडिया के माध्यम से दें। नैनो यूरिया के उपयोग तथा इसका ड्रोन से छिड़काव के लिए किसानों को जागरूक करें। कस्टम हायरिंग सेंटरों और कृषि सेवा केन्द्रों में ड्रोन उपलब्ध कराएं जिससे किसान इनका उपयोग कर सकें। प्रदेश भर में 8 से 11 दिसम्बर तक गीता जयंती से जुड़े कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। गीता ज्ञान और दर्शन से जुड़े कार्यक्रम इनमें शामिल करें। सभी शहरों और कस्बों में गीता जयंती समारोह आयोजित कराएं। प्रमुख सार्वजनिक स्थलों और होटलों में गीता और रामायण की प्रतियाँ रखना सुनिश्चित करें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जनजातियों के कल्याण के लिए धरती आबा ग्रामोत्कर्ष अभियान बहुत महत्वपूर्ण है। प्रदेश के 1137 आदिवासी बहुल गांवों में 16 विभागों की 25 योजनाओं का शत-प्रतिशत लाभ देने के लिए ग्रामवार कार्ययोजना बनाएं। इस कार्य को 10 दिसम्बर तक अनिवार्य रूप से पूरा करें। महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा 25 नवम्बर से 10 दिसम्बर तक हम होंगे कामयाब अभियान चलाया जाएगा। अभियान के तहत महिलाओं के सशक्तिकरण, लैंगिक भेद मिटाने तथा महिला जागरूकता से जुड़े कार्यक्रम आयोजित करें। शहरी क्षेत्रों के गरीब स्वरोजगारियों की स्वनिधि योजना के हर पात्र हितग्राही को लाभान्वित कराकर स्वनिधि भी स्वाभिमान भी योजना को सफल बनाएं। यह अभियान दो दिसम्बर तक चलाया जाएगा। इसके लंबित प्रकरणों के निराकरण के लिए प्रत्येक वार्ड में शिविर आयोजित करें।

मुख्यमंत्री ने राजस्व महाअभियान के संबंध में निर्देश देते हुए कहा कि दो राजस्व अभियान बहुत सफल रहे। राजस्व महाअभियान 3 में भी निर्धारित बिन्दुओं के लंबित राजस्व प्रकरणों का निराकरण कराने के लिए विशेष प्रयास करें। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के सभी प्रकरणों की ई केवाईसी कराकर तथा आधार सीडिंग कराकर हर पात्र किसान को योजना का लाभ दें। कमिश्नर राजस्व अभियान की सतत निगरानी करें। मिलावट के विरूद्ध अभियान एक दिन का काम नहीं है। इसमें खाद्य सामग्रियों के बड़े प्रतिष्ठानों के नमूने लेकर उनकी जाँच कराएं।

अमानक पाए जाने पर जुर्माने और दण्ड की कार्यवाही करें। नरवाई प्रबंधन के लिए भी किसानों को जागरूक करने के साथ-साथ जुर्माने की कार्यवाही करें। वीडियो कान्फ्रेंसिंग में मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन ने एजेण्डा बिन्दुओं की जानकारी दी। कमिश्नर कार्यालय के एनआईसी केन्द्र से कमिश्नर बीएस जामोद, आईजी एमएस सिकरवार, संयुक्त आयुक्त दिव्या त्रिपाठी तथा अन्य संभागीय अधिकारी एवं कलेक्ट्रेट के एनआईसी केन्द्र से कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल, पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह, आयुक्त नगर निगम सौरभ सोनवड़े एवं अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

कलेक्टर ने नगरीय निकायों के विकास कार्यों की समीक्षा की

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने जिले के नगर परिषदों में स्वीकृत विकास कार्यों की समीक्षा करते हुए निर्देश दिये कि अप्रारंभ कार्य तत्काल प्रारंभ करायें तथा जिन कार्यों के ड्राइंग प्राप्त नहीं हुई है उन्हें प्रदेश स्तर से प्राप्त करने के प्रयास कर कार्य प्रारंभ करायें।

कलेक्ट्रेट के बाणसागर सभागार में आयोजित बैठक में कलेक्टर ने अमृत योजनान्तर्गत स्वीकृत कार्यों की समीक्षा करते हुए टंकी निर्माण, डब्ल्यूटीपी निर्माण, सीवरेज कार्य, जल प्रदाय तथा पार्क निर्माण की समीक्षा की। उन्होंने नगर परिषदों में अमृत प्रथम तथा द्वितीय मद से स्वीकृत कार्यों को गुणवत्ता के साथ पूर्ण करने के निर्देश दिये। कलेक्टर ने अधोसंरचना मद के तृतीय व चतुर्थ चरण के कार्यों की समीक्षा के दौरान निर्देशित किया कि इन कार्यों की स्वीकृति में पीआईसी से अकारण विलंब न हो। एसडीएफ मद से तथा कायाकल्प प्रथम व द्वितीय चरण से कराये जा रहे कार्यों को समय सीमा में पूर्ण करने के निर्देश कलेक्टर द्वारा दिये गये। उन्होंने नगर परिषद चाकघाट व त्योंथर में विकास व अधोसंरचना निर्माण के कार्यों के विलंब से होने पर सीएमओ व सबइंजीनियर को नोटिस जारी करने के निर्देश दिये। सीएम हेल्पलाइन की शिकायतों का सीएमओ अपने स्तर पर प्रतिदिन पोर्टल में निरीक्षण कर संतुष्टिपूर्वक समाधान सुनिश्चित करायें। स्वच्छता सर्वेक्षण की तैयारियाँ करने तथा आईईसी में जनसमुदाय की सहभागिता सुनिश्चित कराने के निर्देश कलेक्टर ने सीएमओ को दिये।

बैठक में आयुक्त नगर निगम डॉ. सौरभ सोनवणे ने कहा कि नगर परिषदें पुर्नघनत्वीकरण योजना के प्रोजेक्ट बनायें ताकि इनसे नगर परिषदों में अधोसंरचना का निर्माण हो और उनके वित्तीय संसाधन भी विकसित हो सकें। उन्होंने गंदे पानी को स्वच्छ करने के लिये उपयुक्त स्थलों में एसटीपी निर्माण कार्य कराने के निर्देश सीएमओ को दिये। बैठक में सभी नगर पंचायतों के सीएमओ तथा उपयंत्री उपस्थित रहे।

जिला शिक्षा केंद्र रीवा में अंधेरगर्दी का आलम

बिना काउंसलिंग के मनमाने तरीके से जारी किए जा रहे प्रतिनियुक्ति के आदेश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिला शिक्षा केंद्र रीवा इस समय अधिशेष शिक्षकों से सांठगांठ कर एक-एक शिक्षक का अलग-अलग आदेश बनाकर प्रतिनियुक्ति हेतु सीएसी और बीएसी के आदेश जारी कर रहें हैं, जबकि पूर्व में सोनाली देव सहायक कलेक्टर रीवा की अध्यक्षता में सीएसी और बीएसी की काउंसिलिंग 12 अगस्त 2023 को डाइट सभागार में कराई गई थी। जिसके आदेश आज तक जारी नहीं हुए और काउंसिलिंग में शामिल शिक्षक आज भी आदेश जारी होने का इंतजार कर रहे हैं।

एक बार काउंसिल कराने के बाद उनके आदेश जारी न करना और दूसरी बार बिना किसी पूर्व आदेश के और बिना काउंसिलिंग के मनमाने तरीके से आदेश जारी किए जा रहे हैं और जिला कलेक्टर को गलत जानकारी प्रेषित की जा रही है। राज्य शिक्षा केंद्र के आदेशानुसार पूरे जिले की एक साथ कमेटी बनाकर पारदर्शी रूप से प्रतिनियुक्ति की जाती है जब कि ऐसा नहीं हो रहा है। वर्तमान में सीएसी और बीएसी प्रतिनियुक्ति में न तो विषय का ध्यान रखा जा रहा और न ही उम्र का, जबकि 52 वर्ष से ज्यादा का कोई भी शिक्षक प्रतिनियुक्ति हेतु पात्र नहीं होता। एक जनशिक्षा केन्द्र में दो अलग-अलग विषय के जनशिक्षक रखे जाते हैं। अब पूर्व में 12 अगस्त 2023 में की गई काउंसिलिंग में शामिल शिक्षक निराश हैं और न्यायालय की शरण में जाने को मजबूर हैं।

इस तरह की मनमानी प्रतिनियुक्ति करने से शिक्षा जगत में भारी निराशा है और जिला शिक्षा केंद्र रीवा अपनी अंधेरगर्दी की चरम सीमा लांघ चुका है। समाचार पत्रों के माध्यम से कलेक्टर और मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत से अनुरोध है कि इस अंधेरगर्दी में विराम लगायें और वरिष्ठ कार्यालय को गुमराह करने वाले जिला शिक्षा केंद्र रीवा के अधिकारियों के विरुद्ध कार्रवाई प्रस्तावित करने की मांग की गई है।

अखिल भारतीय कवि सम्मलेन व मुशायरे का आयोजन आज

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा स्वच्छ रीवा, नशा मुक्त रीवा के उद्देश्य को लेकर अल्ट्राटेक सीमेंट, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया और यूनियन बैंक के सहयोग से अखिल भारतीय कवि सम्मलेन व मुशायरे का आयोजन किया जा रहा है। इस दौरान डॉ. महेंद्र सिंह 'समीर' द्वारा रचित ग़ज़लों एवं नज़्मों के संकलन 'इबारत' का विमोचन किया जायेगा। आयोजन 23 नवंबर को स्थानीय कृष्णा राजकपूर ऑडिटोरियम में शाम 7 बजे से होगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उपमुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल रहेंगे। [21] इस अखिल भारतीय कवि सम्मलेन व मुशायरे में देशभर से ख्यातिलब्ध कवियों को आमंत्रित किया गया है। [22] जिसमें मंज़र भोपाली, डॉ. विष्णु सक्सेना, कर्नल वी. पी. सिंह पुणे, सरिता शर्मा दिल्ली, डॉ. महेंद्र सिंह 'समीर' रीवा, मदन मोहन 'समर' भोपाल, अंजुम बाराबंकवी, संदीप शर्मा धार, नदीम फर्रुख़ हरदोई , पप्पू लखनवी, डॉ. मेहताब आलम भोपाल, डॉ. भुवन मोहनी इंदौर, ज़फ़र सेवाई भोपाल, डॉ श्लेष गौतम प्रयागराज और अमित शुक्ला रीवा प्रमुख रूप से मौजूद रहेंगे और अपनी रचनाओं की प्रस्तुति देंगे।

रीवा जिले में राजस्व महाअभियान-2 में 222206 प्रकरणों का हुआ निराकरण

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा संभाग के सभी जिलों में 18 जुलाई से 31 अगस्त तक राजस्व महाअभियान-2 चलाया गया। अभियान के दौरान प्रत्येक ग्राम पंचायतों में विशेष ग्राम सभाओं का आयोजन करके बी-1 का वाचन किया गया। अभियान के दौरान लगातार शिविरों का आयोजन राजस्व प्रकरणों की सुनवाई की गई। अभियान के दौरान राजस्व अधिकारियों ने कुल दो लाख 22 हजार 206 प्रकरणों का निराकरण किया जो संभाग के सभी जिलों में सर्वाधिक है। राजस्व महाअभियान-2 में रीवा जिले में नक्शा तरमीम के 210702 प्रकरणों का निराकरण किया गया। इसी अवधि में आरसीएमएस पोर्टल में दर्ज 7335 नए राजस्व प्रकरणों का भी नियमित सुनवाई करके निराकरण किया गया। अभियान के दौरान नामांतरण के 2746, जमीन के बंटवारे के 851 तथा खसरे में सुधार के 572 प्रकरणों का भी निराकरण किया गया। अभियान के दौरान विशेष प्रयास करके प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के आवेदनों में ई केवाईसी दर्ज कराई गई तथा आधार सीडिंग की गई। अभियान के दौरान 149826 प्रकरणों में ई केवाईसी दर्ज कराई गई। जिसके कारण किसानों को किसान सम्मान निधि और किसान कल्याण योजना का लाभ मिला।

संविधान के 75 वर्ष पूरे होने पर प्रदेश में चलेगा अभियान

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। देश में 15 अगस्त 1947 को देश की आजादी के बाद तैयार किया गया संविधान 26 नवम्बर 1949 को अपनाया गया था। इसके बाद देश में 26 जनवरी 1950 को संविधान लागू किया गया था। संविधान को अपनाने के 75 वर्ष पूरे होने पर संविधान की जानकारी के प्रति जन-जागरूकता के लिये 26 नवम्बर 2024 से वर्ष भर चलने वाला "हमारा संविधान-हमारा स्वाभिमान" अभियान चलाने का निर्णय लिया गया है। इस संबंध में संसदीय कार्य विभाग ने शासन के समस्त विभागाध्यक्ष, संभागीय आयुक्त और कलेक्टर्स को पत्र जारी कर निर्देश जारी किये हैं। अभियान के दौरान जन-सामान्य को संविधान की प्रस्तावना, संविधान का निर्माण और देश के संविधान पर गर्व करने जैसे बिन्दुओं पर मुख्य रूप से जानकारी दी जायेगी। इसी दौरान जन-समुदाय के बीच में संविधान पर केन्द्रित कार्यक्रम भी आयोजित किये जायेंगे। वर्ष भर की गतिविधियों को एक डिजिटल प्लेटफार्म पर लाने के लिये वेबसाइट भी तैयार की गई है। वेबसाइट में गतिविधियों की तस्वीरें और वीडियो अपलोड किये जा सकेंगे। इस अभियान में युवाओं और स्कूल के बच्चों को अधिक से अधिक जोड़ने के लिये एक अन्य वेबसाइट पर संविधान विषय पर निबंध, प्रश्नोत्तरी एवं पोस्टर प्रतियोगिता की तस्वीरें साझा की जा सकती हैं। संविधान के स्थापना दिवस 26 नवम्बर 2024 को मुख्य कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा। इस कार्यक्रमों में जन-प्रतिनिधि नागरिकों के बीच संविधान की प्रस्तावना को पढ़ेंगे। इसी दिन प्रदेश भर की ग्राम पंचायतों में भी सामुहिक रूप से संविधान प्रस्तावना का वाचन किया जायेगा। ग्राम पंचायतों को बाबा साहेब डॉ. बी.आर. अंबेडकर के योगदान का प्रचार करने के लिये मायभारत स्वयं सेवकों के माध्यम से संविधान स्वाभिमान यात्राएं आयोजित किये जाने के लिये भी कहा गया है। यह यात्राएं अनुसूचित जाति - अनुसूचित जनजाति घनत्व वाली आबादी में विशेष रूप से हो। यात्रा के दौरान बाबा साहेब की प्रतिमाओं पर पुष्पांजलि अर्पित की जायेगी। ग्राम सभाओं में संविधान के अनुच्छेद-51(ए) में नागरिकों के मौलिक कर्तव्यों को पढ़कर सुनाया जायेगा।

कमिश्नर ने उच्च प्राथमिकता की योजनाओं की वीडियो कान्फ्रेंसिंग से की समीक्षा, दिये निर्देश

कलेक्टर राजस्व महाअभियान का प्रभावी क्रियान्वयन करें

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कमिश्नर कार्यालय सभागार में वीडियो कान्फ्रेंसिंग से आयोजित बैठक में कमिश्नर ने राजस्व अभियान सहित उच्च प्राथमिकता की योजनाओं की समीक्षा की। कमिश्नर ने कहा कि राजस्व महाअभियान के प्रथम और दूसरे चरण में बड़ी संख्या में राजस्व प्रकरणों का निराकरण हुआ। कलेक्टर राजस्व महाअभियान के तीसरे चरण को भी प्रभावी रूप से लागू करें। अभियान में निर्धारित सीमांकन, बंटवारा, नक्शा तरमीम और प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के प्रकरणों का निराकरण कराएं। धान उपार्जन के लिए एक सप्ताह में सभी खरीदी केन्द्रों में समुचित व्यवस्थाएं करके दो दिसम्बर से धान का उपार्जन कराएं। राजस्व अधिकारी खरीदी केन्द्रों का नियमित निरीक्षण करें।

कमिश्नर ने कहा कि कलेक्टर खाद वितरण की कड़ी निगरानी रखें। विपणन संघ के डबल लाक सेंटरों में अतिरिक्त काउंटर खोलकर खाद का सुगमता से वितरण कराएं। खाद वितरण में सहकारी समितियों को प्राथमिकता दें। खाद की रैक अब नियमित प्राप्त होंगी। मिलावटखोरी के विरूद्ध लगातार कार्यवाही जारी रखें। खाद्य पदार्थों के नमूने अमानक पाए जाने पर जुर्माने की कार्यवाही करें। इस संबंध में हर सप्ताह रिपोर्ट प्रस्तुत करें। गीता जयंती का कार्यक्रम 11 दिसम्बर को आयोजित किया जा रहा है। इसमें महिला सशक्तिकरण, किसानों के कल्याण और युवाओं से जुड़े आयोजन शामिल करें। महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा हम होंगे कामयाब अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत महिला जागरूकता के लिए दीवार लेखन, जागरूकता रथ तथा अन्य माध्यमों का उपयोग करें। कमिश्नर ने कहा कि संभाग के सभी जिलों में नरवाई जलाने की घटनाओं में गत दो वर्षों की तुलना में कमी आई है। नरवाई जलाने की घटना होने पर प्रकरण दर्ज कर जुर्माने की कार्यवाही करें। किसानों को सुपर सीडर और हैप्पी सीडर का उपयोग करके नरवाई प्रबंधन के लिए प्रोत्साहित करें। जनजातीय कल्याण विभाग द्वारा जारी धरती आबा अभियान में शामिल चिन्हित गांवों में बिजली, सड़क, पानी जैसी आधारभूत सुविधाओं का शत-प्रतिशत विकास करें। कलेक्टर बिजली की आपूर्ति तथा खराब ट्रांसफार्मर बदलने की भी नियमित समीक्षा करें। सिंचाई में बिजली की अधिक मांग के कारण लगातार शिकायतें मिलेंगी। इनके निराकरण की समुचित व्यवस्था करें। सभी जिलों में सीएम हेल्पलाइन तथा समाधान ऑनलाइन के एजेण्डा बिन्दुओं में बड़ी संख्या में आवेदन पत्र लंबित हैं। इनके निराकरण के लिए विशेष प्रयास करें। रीवा और सिंगरौली जिले में इस माह बड़ी संख्या में प्रकरणों का निराकरण किया गया है। सीएम हेल्पलाइन में लंबित राजस्व प्रकरणों के निराकरण को भी प्राथमिकता दें। कमिश्नर ने संभाग भर में आयोजित हो रहे रक्तदान शिविरों को सफल बनाने के निर्देश दिए।

बैठक में वीडियो कान्फ्रेंसिंग से शामिल विभिन्न जिलों के कलेक्टर ने निर्धारित एजेण्डा बिन्दुओं की बिन्दुवार जानकारी दी। बैठक में कलेक्टर रीवा श्रीमती प्रतिभा पाल, कलेक्टर सतना अनुराग वर्मा, कलेक्टर मैहर रानी बाटड, कलेक्टर सीधी स्वरोचिष सोमवंशी, कलेक्टर सिंगरौली चन्द्रशेखर शुक्ला, सभी जिलों के मुख्य कार्यपालन अधिकारी शामिल रहे। कमिश्नर कार्यालय में बैठक में संयुक्त आयुक्त दिव्या त्रिपाठी तथा सभी संभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

संजीवनी क्लीनिक का निरीक्षण

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा शहर के बोदा बाग़ स्थित संजीवनी क्लीनिक की दिल्ली से आई 12 लोगों की टीम ने जांच की। साथ में भोपाल से भी टीम शामिल हैं। बताया जा रहा है कि भोपाल से सात सदस्यीय टीमें हैं, जो दिल्ली की टीम के साथ क्लिनिको की जांच कर रही हैं। इस टीम ने पहले ग्रामीण क्षेत्रों में क्लिनिको की जांच की, इसके बाद शुक्रवार को शहर में संचालित क्लिनिकों की जांच के लिए पहुंचे। बताया जा रहा है कि क्लिनिकों को मिलने वाले फंड का सही उपयोग किया जा रहा है या नहीं, इस बात की जानकारी जुटाई जा रही है।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।